मासिक

अध्यात्म संदेश

जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन की मासिक ई – पत्रिका

वर्ष:3 | अंक:14 | पृष्ठ:38 | मूल्य:निःशुल्क | इंदौर–उज्जैन | शुक्रवार 1 सितम्बर 2023 | भाद्रपद/आश्विन (क्वॉर) मास (7), विक्रम संवत् 2080 | इ.संस्करण

मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन का मासिक ई–पत्र
editor.adhyatmsandesh@gmail.com
m.facebook.com/अध्यात्म संदेश
गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन
www.gssfoundation.org

प्रेरणा स्रोत
महासिद्ध गुरू गोरक्षनाथ जी

सलाहकार समिति
महंत बालक नाथ योगी जी
गद्दीनशीन महंत, मठ अस्थल बोहर, रोहतक
संसद सदस्य (लोकसभा), अलवर, राजस्थान
कुलाधिपति, श्री बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय (हरियाणा)

महंत पीर योगी रामनाथ जी
भर्तृहरि गुफा, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

महंत डॉ. योगी विलासनाथ जी
अध्यक्ष, श्री गुरू गोरक्षनाथ शिव पंचायतन मन्दिर (ट्रस्ट), गाळणे (महाराष्ट्र)

राष्ट्रसंत बालयोगी उमेशनाथ जी
पीठाधीश्वर–वाल्मीकि धाम, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

प्रधान सम्पादक
योगी शिवनन्दन नाथ

सम्पादक मंडल
वरिष्ठ सम्पादक
डॉ. संतोष खन्ना (दिल्ली)
सम्पादक
डॉ. अलका शर्मा (दिल्ली)
उपसम्पादक
श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा (लखनऊ)
सुश्री इंदु सिंह "इन्दुश्री" (मध्य प्रदेश)

ग्राफिक्स
IDEAwave COMMUNICATIONS

प्रकाशक एवं स्वामी
गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन

- गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फाउंडेशन सर्वाधिकार सुरक्षित। किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित।
- पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का समस्त उत्तरदायित्व लेखकों का है। प्रकाशक, प्रधान संपादक एवं संपादक मंडल इसके लिए किसी भी प्रकार से उत्तरदायित्व नहीं होंगे।
- समस्त विवादों का निस्तारण, मध्य प्रदेश सीमांतर्गत सक्षम न्यायालयों में किया जाएगा।

editor.adhyatmsandesh@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ क्र.
1	संपादक की कलम से	डॉ. अलका शर्मा	03
2	भारत के चंद्रयान– 3 ने बनाया...	योगी शिवनन्दन नाथ	07
3	हम चंदा पर	प्रो. डॉ. शरद नारायण खरे	08
4	शिक्षक एक राष्ट्र निर्माता	श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा	09
5	बन्दउँ अवध पुरी अति पावनु	ब्रह्मेश्वर नाथ मिश्र	11
6	भारत की बात सुनाता हूँ	डॉ. श्याम सुन्दर पाठक 'अनन्त'	12
7	पर्यावरण चिन्तन 8	डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह	14
8	विश्व पटल पर हिन्दी के बढ़ते...	कृष्ण कुमार यादव	15
9	लोक संस्कृति में अद्वैत दर्शन	डॉ. अर्चना प्रकाश	20
10	चिंतनीय प्रशन	डॉ. अरविंद जैन (विद्यावाचस्पति)	22
11	परिवर्तन	सुजाता प्रसाद	23
12	भजन	भीम सिंह नेगी	23
13	सात्विक चेतना का दायित्वबोध	डॉ. अजय शुक्ला	24
14	हे हनुमान	व्यग्र पाण्डे	27
15	स्वतंत्र देश की परतंत्र वाणी	डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम	28
16	युगद्रष्टा तुलसी	डॉ. विष्णुप्रसाद पाठक	30
17	हर्षाल्लास से मनाये गणेशोत्सव	सुश्री इंदु सिंह 'इंदु श्री'	31
18	धरा का श्रृंगार	भावना दामले	32
19	देवताओं और ऋषि मुनियों...	डॉ. शारदा मेहता	33
20	गर्भ के नौ माह	पंडित कैलाशनारायण	37

संपादक की कलम से

डॉ. अलका शर्मा
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
संपादक अध्यात्म संदेश

अपरिमित ज्ञान का भंडार है शिक्षक। अज्ञान के अन्धकार में ज्योति पुंज है शिक्षक ।। शिष्यों को मंजिल तक पहुंचने वाले गुरुओं का वंदन । जिनकी चरण धूलि भी है चंदन।।

शिक्षा, शिक्षक राजभाषा, भाषा, साहित्य, साहित्यकार किसी भी राष्ट्र की उन्नति के मूल स्तंभ माने जाते है। क्योंकि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य युवा वर्ग के चरित्र को उन्नत करके, उनको महापुरुषों के जीवनवृत व उच्चादर्शों के प्रति प्रेरित करके उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना होता है और इस कार्य में शिक्षकों की भूमिका सर्वोपरि होती है। आप सोचिए ? जिन शिक्षको के हाथों हर व्यवसाय के करोड़ो हीरे तराशे जाते हो। समाज में उसकी भूमिका सर्वोपरि होनी स्वभाविक ही है। इसी लिए हर काल मे गुरु का बहुत सम्मान होता था। खुद वही रहकर अपने शिष्यों को सफलता के चरम शिखर पर पहुंचाना ही जिसकी सफलता है। शिक्षा, शिक्षक व शिष्य के बीच महत्वपूर्ण कड़ी साहित्य व साहित्यकार है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने लोक मंगल को ही अच्छे साहित्य की प्रथम शर्त के रूप में स्वीकार किया है।

कीरति भनाति भूतल भल सोय।र। सरसाहि सम सब कबहु कहूँ हित होय।

इसी किये समाज व लोकमंगल के लिए उपयोगी, उत्तम सार्थक साहित्य प्रदान करना साहित्यकार का सामाजिक दायित्व है। साहित्यकार वही श्रेष्ठ है जिसके साहित्य में गंगा के समान सबका हित साधन हो साहित्यकार केवल अपना प्रयोजन सिद्ध न करे। कीर्ति, कविता (साहित्य) ऐश्वर्य, वैभव वही अच्छा जो गंगा के समान सबका हित साधक हो। केवल अपना ही अर्थसिद्धि का प्रयोजन सिद्ध न करे। इस बार सितंबर मास का आगमन एकरसता को दूर करने के लिए सामाजिक, धार्मिक पर्वो के सुंदर उपहारो के साथ हो रहा है ।

5 सितंबर *भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति और द्वितीय राष्ट्रपति, महान शिक्षाविद, भारतीय संस्कृति के संवाहक भारत के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित* ***डॉ. राधा कृष्णन*** *का जन्मदिवस है। उन्होंने अपना जन्मदिन भारत के शिक्षकों के नाम करके शिक्षक दिवस के रूप में मनाये जाने का प्रस्ताव रखा तभी से सम्पूर्ण भारत मे उनका जन्मदिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। हम सबकी ओर से भी भारत के समस्त शिक्षकों का कोटि कोटि नमन।*

7 सितंबर गीतोपदेशक, मदन मुरारी श्री बाँके बिहारी, यशोदा - नंदन, बलराम सखा मित्र - सुदामा, राधा रमण, माखनचोर श्री कृष्ण भगवान का चिर प्रतीक्षित जन्मोत्सव का पर्व है।

जन्माष्टमी पर्व सभी श्रद्धालुओ के द्वारा पूर्ण श्रद्धा, हर्ष उल्लास के साथ धूम-धाम से मनाया जाता है। इस पर्व की सार्थकता इसी में है कि हम श्री कृष्ण जी के बताए उच्चादर्शो को अपने जीवन

मे अपनाए । गीता में श्री कृष्ण ने कहा है -

बस कर्म ही तुम्हारा कल होगा। कर्म में अगर सच्चाई है तो कर्म कहाँ निष्फल होगा।।

14 सितंबर हिंदी दिवस के रूप में सम्पूर्ण भारत मे मनाया जाता है इतने विस्तृत भूभाग तक फैले विविधताओं से भरे भारत देश मे हिंदी सभी भारत वासियों को उसी प्रकार एकता के सूत्र में बांधकर रखती है जिस प्रकार एक मजबूत धागा रंगबिरंगे -बिखरे पुष्पो को माला का रूप दे देता है । हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है । जो अत्यंत सरल सुबोध व वैज्ञानिक भाषा है । इसकी व्यंजन ध्वनि में प्रयुक्त शारीरिक अवयवों का स्पंदन योग विज्ञान पर आधारित है। इसके आँचल में अनेको बोलियाँ उपबोलियाँ मुसकराती सी प्रतीत होती है। उनको तत्सम व तद्भव शब्द और विदेशी शब्द बड़ी सरलता से इसमें घुलमिल जाने के कारण प्रसन्नता से मानो किलकारी सी मारते हुए जान पड़ते है । भारतेंदु हरिश्चंद्र ने भी अपनी मातृ भाषा की उन्नति को सभी प्रकार की उन्नति का मूल माना है - **निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति को मूल ।**

हिंदी, शासन की नही जन-जन की वाणी है। वाणी अधिकार की नही प्यार की, राष्ट्र के सुख दुख की अभिव्यक्ति की। हिंदी भाषा नही नाद है जो कभी कबीर के मुख से अनहद रूप में व्यक्त हुआ तो कभी दिनकर, प्रेमचंद्र, मैथिली शरण गुप्त, निराला व पंत की लेखनी से प्रसृत हुआ। अपनी मातृभाषा पर गर्व करने और उसके संवर्धन व संरक्षण करना ही वास्तव में सभी भारत वासियों के प्रमुख कर्तव्य है

28 सितंबर अनंत चतुर्दशी का पावन पर्व है जिसमे विष्णु भगवान के अनंत स्वरूपो की पूजा की जाती है। 10 दिनों तक चलने वाले महाराष्ट्र के प्रमुख गणेशोत्सव में गणेश विसर्जन भी इसी दिन किया जाता है। देश को आजादी दिलाने के लिए हँसते हँसते फांसी के तख्ते पर झूल जाने वाले माँ भारती के सच्चे सपूत, अमर बलिदानी शहीद भगत सिंह की जयंती ऐसा दिन है जब उनके बलिदान का स्मरण करते ही आँखे सहज ही नम हो जाती है शब्द कम पड़ जाते है। उनके विषय मे कहने को तो बहुत कुछ है पर मैं इतना ही कहूंगी - **शहीद भगत सिंह अमर रहे।**

29 सितंबर को विश्व हृदय दिवस मनाया जाएगा। वर्ल्ड हार्ट फेडरेशन द्वारा विश्व स्वास्थ्य संगठन के सहयोग से 2000 में यह सर्वप्रथम मनाया गया। इस वैश्विक अभियान का उद्देश्य हृदय रोग की रोकथाम, उसके बचाव के तरीकों के प्रति जागरूकता पैदा करना है क्योंकि हर वर्ष करोड़ो लोग हृदय रोग के कारण असमय में ही काल का ग्रास बन जाते है। हम सभी को इसके बचाव के लिए अपनी गलत दिनचर्या व तामसिक भोजन प्रणाली में सुधार के विषय मे एक कदम आगे बढ़ाना होगा।

अध्यात्म संदेश पत्रिका का सितंबर मास का नवीन अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं अति हर्षित हूँ महत्वपूर्ण दिनों पर्वो, जयंती के अनूठे मिश्रण से इस मास का महत्व और भी द्विगुणित हो जाता है। इससे संबंधित विषयों अति ज्ञानवर्धक, प्रेरणाप्रद लेखों से सहयोग देने वाले सभी लेखकों का हृदयतल मैं आभार। आशा है कि हमारी पत्रिका सभी सुधी पाठकों की रुचि की कसौटी पर खरी उतरेगी। और पत्रिका के प्रति आपका स्नेह उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होगा।

शिक्षक दिवस व हिंदी दिवस की शुभकामनाओं सहित

संपादक

-डॉ. अलका शर्मा

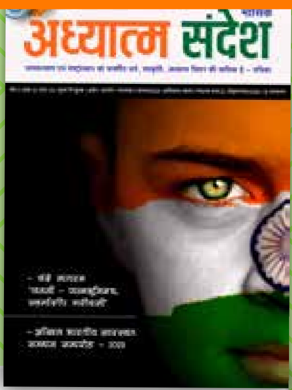

आपकी प्रतिक्रियाऐं

संपादक जी के नाम पत्र

महोदया प्रणाम!

माह अगस्त, 2023 का 'अध्यात्म संदेश' पढ़ा। संपूर्ण अंक रोचक, ज्ञानप्रद एवं सांस्कृतिक महत्व को संजोये हुए हैं। प्रस्तुत अंक में 'पर्यावरण चिंतन–7' बहुत ही प्रभावी लगा। लेखक डॉ. मेहता जी, पर्यावरणविद् ने बहुत ही विस्तार से तथ्यों के आधार पर सरल उदाहरण के माध्यम से आमजन को घरेलू अवशिष्ट के निदान तथा जल प्रदूषण न करने के बारे में हिदायत दी है। कुल मिलाकर यह लेख बहुत ही प्रभावी बन पड़ा है।

लेखक को बधाई एवं भावी जीवनार्थ शुभकामनायें।

– डॉ. मक्खन लाल तंवर
नारनौल, हरियाणा।

अध्यात्म का सार समाया बातों में,
बंद मुट्ठी का सार बताया बातों में।
क्या लाया था क्या लेकर जायेगा,
कर्मो का विस्तार बताया बातों में।

नहीं जानता अगले पल में क्या होगा,
नहीं जानता मरने पर भी क्या होगा?
दौड़ रहा माया के पीछे युगों युगों से,
नहीं जानता तेरे पीछे माया का क्या होगा?

सगे सम्बन्धी जिनकी खातिर माया जोड़ी,
माया की खातिर सच्चाई से आंखें मोड़ी।
सम्मुख ही सब खूब लड़ेंगे इसकी खातिर,
कर देंगे मोहताज तुझे सब कौड़ी कौड़ी।

मुट्ठी बन्द किए आया था प्राणी जग में,
खाली हाथ चला जायेगा प्राणी मग में।
कर सकता संचय तो सत्कर्मो का कर लें,
काम वही आयेंगे तेरे जीवन की डग में।

– कीर्ति वर्द्धन

अगस्त माह की अध्यात्म सन्देश

पत्रिका एक उच्चस्तरीय एवम सर्वोपयोगी पत्रिका है। कवर पृष्ठ तिरंगा ध्वज व वन्दे मातरम गीत की छवि से सुसज्जित है। सम्पादिका डॉ. अलका शर्मा जी का उद्बोधन – 'कलम आज उनकी जय बोल!' अद्भुत व रोमांचक है। ये पत्रिका धर्म आध्यात्म , दर्शन एवम समसामयिक विषयो की सम्पूर्ण जानकारी देती है। सभी लेख मनोहारी चित्रों से सज्जित है। इससे पत्रिका का आकर्षण और भी बढ़ जाता है।

वर्षा ऋतु एवम सावन की कविताएं मौसम के सजीव चित्र उकेरती हैं। गोस्वामी तुलसी दास का जीवन वृत व राम चरित मानस की भव्यता भी छुटी नहीं। सावन अधिकमास के माहात्म्य व उपयोगिता के लिये डॉ. शारदा मेहता जी बधाई की पात्र हैं। संतोष खन्ना जी का अगस्त क्रांति अप्रतिम रचना है। सावन में नागों के पूजन के महत्व को रेखांकित करता श्रीमती सुषमा सागर जी का लेख ,नागों के विषय मे बहुत सी भ्रांतियों को दूर करता है। नाग पंचमी त्योहार व्यक्ति के जीवन के दार्शनिक तत्व को उजागर करता है।

सावन में कजरी व झुलागीतो की विशिष्ट लय, ताल, व सरसता होती हैं। जिसे कृष्णकुमार यादव जी ने रोचकता से प्रस्तुत किया है।

संक्षेप में पत्रिका समाज के सभी वर्गो के लिए उपयोगी है।

असीम शुभकामनाओ के साथ,

– डॉ. अर्चना प्रकाश
गोमतीनगर, लखनऊ।

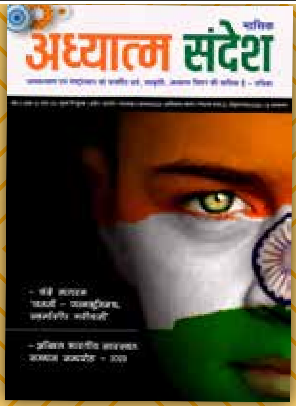

आपकी प्रतिक्रियाऐं

अलका जी की कलम ने कमाल कर दिया एक ही गुलदस्ते में अगस्त की क्रांति शहीदों का बलिदान अनेक पुण्य दिवस और राखी का पवित्र त्यौहार आदि के फूल संजो दिये हैं। इन विषयों पर लेख कविता प्रेरित होंगे शुभकामनाओं सहित

– डॉ. रमेश कुमार लौ
भूतपूर्व विभागाध्यक्ष संस्कृत
गाजियाबाद

यह पत्रिका मुझे वाट्सप पर मिला पढ़कर बहुत अच्छा लगा, लेकिन आपने मेरे वाटसप पर कैसे भेजे, खैर ज्ञान कहीं से भी आए वह ग्रहणशील होना चाहिए। इसके लिए बहुत बहुत धन्यवाद, इसे मैं साऊथ सूडान मे पढ रहा हू यहां पर यह पत्रिका ही मानसिक खुराक है, अतः पुनः धन्यवाद।

– विजयानन्द उपाध्याय
साऊथ सूडान

अगस्त माह की ई–मासिक 'अध्यात्म संदेश' पत्रिका में विभिन्न विषयों पर जानकारी प्राप्त हुई। आज पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से हम अपनी सनातन धर्म के ज्ञान को भूलते जा रहे हैं जिसे जीवन्त करने का सफल प्रयास इस पत्रिका के माध्यम से हो रहा है ।

अगस्त माह स्वाधीनता पर्व के साथ और भी कई पर्व लेकर आता है सो हर पर्व के बारे मनोरंजन के साथ पाठक को इसकी जानकारी मिलती है। भाई बहन के प्यार का प्रतीक रक्षाबंधन होने की वजह से इससे संबन्धित आलेख व प्यारी कविताएं , पर्यावरण संबन्धित डॉ नागेन्द्र सिंह जी का आलेख जिसमे दूषित पर्यावरण से बचने हेतु कई महत्वपूर्ण जानकारियाँ दी गई, व डॉ अलका शर्मा ने अपने आलेख में पौराणिक शास्त्रों में लिखित अधिकारों व आज के अधिकारों की कई विषयों में समानता की बात कही। डाक्टर हनुमान प्रसाद जी की मानवतावादी विश्वकवि तुलसीदास जी के बारे चंद शब्दों में ही बहुत सुन्दर रचना पढ़ने को मिली। डॉ. अजय शुक्ला जी के आलेख से पता चला कि आत्मशक्ति एवम् योग्यता की अनुभूति द्वारा कर्मठ रहकर मनुष्य के लिए बड़े से बड़े कार्य करना सम्भव हो जाता है वहीं दूसरी ओर डॉ. अर्चना प्रकाश जी ने अपनी कहानी 'इन्द्रधनुष' में बहुत सुन्दरता के साथ वर्णन किया है कि कभी–कभी विदेश के प्रति मोह हमें बहुत मंहगा साबित पड़ सकता है।

इस पत्रिका में इतना कुछ होने के बावजूद हमें अपनी परम्पराओं, राष्ट्रीय पर्व और अपने रीति रिवाजों के बारे भी विभिन्न लेखों द्वारा जानकारी दी गई है और बताया गया है कि इन सब के पीछे गहन वैज्ञानिकता छिपी हुई है। सब रचनाएँ बड़े बड़े महानुभावों द्वारा लिखी गई एक से बढ़कर एक हैं। कुछ रचनाएँ छोटी होने के बाद भी ऐसा लगा मानो रचनाकारों ने गागर में सागर भर दिया हो। ऐसी ज्ञानवर्धक रचनाओं को भला कौन पाठक पढ़ना नही चाहेगा। अंत में इतना ही कहुँगी कि हर पाठक के लिए ज्ञान कोष से पूर्ण एक पठनीय पत्रिका।

– दया शर्मा
शिलांग (मेघालय)

गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फाउण्डेशन
www.gssfoundation.org
editor.adhyatmsandesh@gmail.com
m.facebook.com/अध्यात्म संदेश
मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन का मासिक ई–पत्र

भारत के चंद्रयान - 3 ने बनाया विश्व रिकॉर्ड

– योगी शिवनन्दन नाथ
प्रधानसम्पादक

अद्‌भुत, अविश्वसनीय, अविस्मरणीय, वह ऐतिहासिक पल जब चंद्रमा के दक्षिण ध्रुव पर भारत के चंद्रयान–3 ने सॉफ्ट लैंडिंग कर इतिहास रच दिया। चंद्रमा के जिस हिस्से पर अभी तक कोई नहीं पहुंच पाया वहां अब भारत पहुंच गया है। चंद्रमा का वह भाग जिसे अभी तक दुनिया में कोई नहीं देख पाया था, उसे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने चंद्रयान–3 मिशन से दुनिया को साक्षात दिखा दिया है। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला भारत दुनिया का पहला देश बन गया है। इससे पूर्व अमेरिका, चीन और रूस भी अपने लैंडर चंद्रमा की सतह पर उतार चुके हैं, लेकिन चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर भारत के अतिरिक्त अभी तक कोई नहीं पहुंच सका ।

इस महत्वपूर्ण ऐतिहासिक उपलब्धियों भरे अवसर पर देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दक्षिण अफ्रीका और ग्रीस यात्रा से लौटकर सीधे बेंगलुरु इसरो मुख्यालय पहुंचे और चंद्रयान– 3 मिशन की सफलता के लिए इसरो अध्यक्ष एस. सोमनाथ को गले लगा कर बधाई दी। हर्ष और भावुकता के इन पलों से उनका गला रुंध गया आंखें नम हो गई। पीएम ने चंद्रयान–3 मिशन की सफलता के लिए नारी शक्ति की सराहना की। मिशन से जुड़े सभी पुरुष एवं महिला वैज्ञानिकों/इंजीनियरों को सैल्यूट करते हुए कहा कि आप देश को जिस ऊंचाई पर ले गए हैं वह कोई साधारण सफलता नहीं है आपके अथक परिश्रम से आज हम वहां पहुंचे जहां अभी तक कोई नहीं पहुंचा। चंद्रयान–3 की कामयाबी ने देश का गौरव बढ़ाया है, पूरी दुनिया में भारत की जय जयकार हो रही है। इसरो के वैज्ञानिकों ने वह कर दिखाया जो दुनिया के तमाम देश आज तक नहीं कर पाए।

पीएम ने घोषणा करते हुए कहा कि टच डाउन के स्थान का नामकरण करने की एक वैज्ञानिक परंपरा रही है, भारत ने चंद्र क्षेत्र का नामकरण करने का निर्णय लिया है, चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के उस स्थान को जहां चंद्रयान –3 का विक्रम लैंडर सफलतापूर्वक उतरा है वह पॉइंट पूरी दुनिया में अब **'शिव शक्ति पॉइंट'** के नाम से जाना जाएगा, एवं साथ ही यह ऐतिहासिक दिवस 23 अगस्त, **'राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस'** के रूप में मनाया जाएगा।

अनेक देशों ने पिछले 6 दशकों में 100 से भी अधिक मून मिशन हेतु प्रयास किया, लेकिन सभी को सफलता प्राप्त नहीं हुई। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचना विश्व के अनेक देशों का सपना रहा है। लेकिन भारत का यह चंद्र मिशन दुनिया में विश्व विजय अभियान बनकर सामने आया है। भारत की धरा से 3 लाख 84 हजार मील का सफर तय करके चंद्रयान–3 का लैंडर विक्रम चंद्रमा के उसे कक्षा के ऊपर पहुंच गया जो अनंत रहस्यों से भरा है। जिसके सच से विश्व पूरी तरह अनजान है।

14 दिनों तक लैंडर विक्रम और रोवर प्रज्ञान, चंद्रमा की उन सभी जानकारियों को इसरो हेडक्वाटर तक प्रेषित करेंगे जिसे जानने के लिए पूरी दुनिया उत्सुक है। यहां पर यह उल्लेख करना आवश्यक है की चांद पर एक दिन पृथ्वी के 14 दिनों के बराबर होता है। 23 अगस्त को चांद के दक्षिणी ध्रुव पर सूर्य उदय होगा। यहां 14 दिनों तक दिन रहेगा इस कारण से चंद्रयान–3 के लेंडर और रोवर 14 दिनों तक चांद की सतह पर रिसर्च करेगा। प्रज्ञान के कार्य का प्रारंभ लेजर बीम के साथ होगा। यह लेजर बीम चांद के टुकड़े को पिघलाएगी जिससे उत्सर्जित गैसों का विश्लेषण

एवं जानकारी इसरो को भेजी जाएगी। रोवर प्रज्ञान चंद्रमा की सतह पर केमिकल और मिनरल की जानकारी जुटाएगा और साथ ही दक्षिण ध्रुव की रासायनिक संरचना का पता लगाएगा। इसरो वैज्ञानिकों के कथनानुसार रोवर प्रज्ञान चंद्रमा पर परीक्षण के लिए लैंडर विक्रम से 500 मीटर दूरी तक जा सकता है, जिसकी स्पीड 1 सेंटीमीटर प्रति सेकंड से भी कम हो सकती है। कौन–कौन सा केमिकल चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर विद्यमान है, चंद्रमा पर किस केमिकल की कितनी मात्रा है। मैग्नीशियम, अल्युमिनियम, सिलिकॉन, पोटेशियम, कैल्शियम, टिन, लोहा जैसी धातुओं के बारे में पता लगाने का प्रयास किया जाएगा। चंद्रयान–3 मिशन में उच्चतम तकनीक का प्रयोग किया गया है। जिस समय रोवर प्रज्ञान चंद्रमा की सतह पर धातु का पता लगा रहा होगा उस समय लैंडर विक्रम में लगे पेलोड चंद्रमा पर भविष्य की संभावना को खोजेंगे। लैंडर पर स्थापित पेलोड के कार्य–

- ये लैंडिंग साइट की 500 मीटर के दायरे में भूकंप एवं अन्य प्राकृतिक संभावनाऐं व आपदाओं से जुड़ी जानकारी जुटाएगा।
- चंद्रमा की सतह पर मौसम व तापमान की जानकारी जुटाएगा।
- चंद्रमा की डायनामिक्स को समझने का प्रयास करेगा।

रोवर प्रज्ञान के पहिए चंद्रमा की सतह पर अशोक स्तंभ एवं इसरो के लोगो की छाप इसरो के गौरवशाली इतिहास को लिख रही है। इसरो हेड क्वार्टर में निरंतर प्राप्त चंद्रमा की नई तस्वीरें प्राप्त हो रही है जो चंद्रमा पर भारत के बढ़ते कदम का प्रतीक है। नासा के वैज्ञानिकों के अनुसार चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर बर्फ कई तरह के प्राकृतिक संसाधन भी हो सकते हैं लेकिन दुनिया अभी तक इस सत्यता से परिचित नहीं हुई है। वैज्ञानिकों के अनुमान के अनुसार चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव में अरबों वर्षों से पानी बर्फ के रूप में जमा हो सकता है। यदि चंद्रमा–3 के रोवर ने इसकी पुष्टि कर दी तो चंद्रमा पर जीवन की संभावनाओं से जुड़े प्रमाणिक संकेत प्राप्त हो सकते हैं, यदि संकेत सकारात्मक प्राप्त हुए तो चंद्रमा पर भविष्य में जीवन संभव हो सकता है।

23 अगस्त 2023 को चंद्रयान–3 ने चांद के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र में लैंडिंग की थी। आज चंद्रमा पर एक सप्ताह अर्थात चंद्रमा का आधा दिन उसने पूरा कर अपनी अप्रत्याशित खोज इसरो को प्रेषित की है प्रज्ञान रोवर ने 29 अगस्त 2023 की रात्रि को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र में प्रज्ञान रोवर में लगे पेलोड ने चांद पर ऑक्सीजन और सल्फर का पता लगा लिया है और इस बात की पुष्टि कर दी है। खोज करने के इसी क्रम में हाइड्रोजन एवं अन्य केमिकल व धातुओं की खोज जारी है। पूरी दुनिया की नजरे चंद्रयान–3 की खोज के अप्रत्याशित परिणाम पर निरंतर लगी हुई है... भारत (इसरो) की इस ऐतिहासिक विजय पर हम जितना भी गर्व करें कम है।

हम चंदा पर

प्रो. डॉ. शरद नारायण खरे
प्राचार्य
शासकीय जेएमसी महिला महाविद्यालय
मंडला (म.प्र.)

चंद्रयान पहुँचा चंदा पर, तीन रंग फहराये।
शान बढ़ी, सम्मान बढ़ गया, हम सारे हर्षाये।।

जीरो को खोजा था हमने, आर्यभट्ट पहुँचाया।
छोड़ मिसाइल शक्ति बने हम, सबका मन लहराया।।
सबने मिल जयनाद गुँजाया, जन–गण–मन सब गाये।
शान बढ़ी, सम्मान बढ़ गया, हम सारे हर्षाये।।

मैं महान हूँ, कह सकते हम,हमने यश को पाया।
एक महागौरव हाथों में, आज हमारे आया।।
जिनको नहीं सुहाते थे हम, उनको हम हैं भाये।
शान बढ़ी, सम्मान बढ़ गया, हम सारे हर्षाये।।

जो कहते थे वे महान हैं, उनको धता बताया।
भारत गुरु है दुनिया भर का, यह हमने जतलाया।।
शान तिरंगा–आन तिरंगा, गीत लबों पर आये।
शान बढ़ी, सम्मान बढ़ गया, हम सारे हर्षाये।।

अंधकार में किया उजाला, ताकत को बतलाया।
जो समझे थे हमको दुर्बल, उन पर भय है आया।।
जोश लिये हर जन उल्लासित, हम हर दिल पर छाये।
शान बढ़ी, सम्मान बढ़ गया, हम सारे हर्षाये।।

ज्ञान और विज्ञान रचे हम, हमने शशि को पाया।
आशाओं का सूरज दमका, हमने नवल रचाया।।
नया और अनुपम–मंगलमय, विजय–ध्वजा फहराये।
शान बढ़ी,सम्मान बढ़ गया, हम सारे हर्षाये।।

05 सितंबर पर विशेष

शिक्षक एक राष्ट्र निर्माता

श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा
उपसम्पादक (अध्यात्म संदेश)
सेवानिवृत्त प्रधानाचार्या
राजकीय विद्यालय, लखनऊ

एक शिक्षक राष्ट्र निर्माण के साथ–साथ समाज का पथ प्रदर्शक भी होता है। शिक्षा के माध्यम से वह नई पीढ़ी को संस्कारवान एवं चरित्रवान बनाने की क्षमता रखता हैं जो भविष्य में आदर्श नागरिक बनकर देश के विकास में सहयोग देते हैं। इसके साथ ही शिक्षक समाज को संगठित कर राष्ट्र निर्माण में अग्रणी भूमिका का निर्वहन भी करते हैं। एक देश तभी चहुंदिश उन्नति कर सकता है जबकि उस देश के किसान, जवान एवं विद्वान को सम्मान एवं महत्ता प्राप्त होती है, परन्तु आज के भौतिकवादी एवं चमक–दमक के समय में हमारे देश में ये तीनों ही उपेक्षित हैं क्योंकि किसान को आर्थिक रूप से पिछड़ा, जवान की कुर्बानी के जज्बे को उसकी मजबूरी तथा विद्वान को सामाजिक तौर पर गरीब की श्रेणी में माना जाता है जो कि अत्यंत अफसोस का विषय है।

आधुनिक समाज में सफल शिक्षक वही है जो अपने विद्यार्थियों को विषय ज्ञान दे सके और उन्हें परीक्षा में अच्छे अंक दिलवा सके, भले ही उनमें अन्य मानवीय गुणों का अभाव रह जाय क्योंकि हमारे देश में शिक्षा का स्वरूप ही ऐसा है जिसमें अंक ही योग्यता का पैमाना है न कि विषय का गहन ज्ञान। यद्यपि हमेशा से ऐसा नहीं होता है, शिक्षक और शिक्षा का सदैव सम्मान के पात्र होते है, ऐसे अनेकों उदाहरण देखने को मिलते हैं जिसमें शिक्षक ने विद्यार्थी के जीवन की दिशा और दशा दोनों ही बदल कर उसे उज्जवल भविष्य के शिखर पर पहुंचा दिया, ऐसे शिक्षक सदैव सम्मान के पात्र होते हैं, यह उनकी शिक्षा का प्रभाव ही है कि उनकी एक आवाज पर सारे विद्यार्थी उसी राह पर चलने के लिए प्रेरित हो जाते हैं जिस पर वह उन्हें

ले जाना चाहता है। अतः हम कह सकते हैं शिक्षक की जिम्मेदारी हर परिवेश में महत्वपूर्ण रही है और आगे भी बनी रहेगी।

हमारा देश कभी विश्व गुरु था एवं ज्ञान की सभी विधाओं में अग्रणी था। विश्व के अन्य देशों से विद्यार्थी भारत के सुविख्यात गुरुकुल जो कि तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला आदि में स्थापित थे, ज्ञानार्जन करने के लिए आते थे, जहां पर वे विभिन्न विषयों का योग्य शिक्षकों के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करते थे। शनैः शनैः विदेशी आक्रांताओं, मुगलों, फ्रांसीसियों एवं पुर्तगालियों आदि ने हमारे साहित्य को लूटा, नष्ट किया और अंत में अंग्रेजों ने तो हमारे ज्ञान से परिपूर्ण दुर्लभ साहित्य एवं स्वर्णिम इतिहास पर अपना आधिपत्य ही जमा लिया जिसे पुनः वापस लाने के लिए कितने बलिदान देने पड़े, परंतु इन सबके परिणाम स्वरूप शिक्षा की दशा इतनी दयनीय हो गई थी कि पुनः उस गौरव को प्राप्त करना असंभव सा लगने लगा था, क्योंकि हमारी संपन्न और नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण शिक्षा की जड़ें बहुत कमजोर हो चुकी थी। लॉर्ड मैकाले के अनुसार यदि किसी देश को बर्बाद करना हो तो उसकी ऐतिहासिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत को नष्ट कर दिया जाए जो कि उस देश की रीढ़ की हड्डी होती है। लॉर्ड मैकाले ने इसी सिद्धांत को अपनाते हुए आंग्ल भाषा को प्रोत्साहन एवं मातृभाषा का तिरस्कार को आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली का आधार बनाया, जिसका उद्देश्य था, एक ऐसे समाज का निर्माण करना जो आजाद होने के बाद भी आंतरिक रूप से एवं मानसिक रूप से गुलाम ही बना रहे और जिसमें वे सफल भी हुए।

अंग्रेजों से आजादी के बाद भी भारतीय शिक्षा नीति में कोई बदलाव नहीं आया, शिक्षा का मूल उद्देश्य छात्रों को संस्कारवान, चरित्रवान और विद्वान बनाने के स्थान पर समाज में पाश्चात्य विचार धारा, पाश्चात्य वेशभूषा एवं पाश्चात्य रहन–सहन के प्रति आकर्षण जागृत करना हो गया था और स्वदेशी को गंवार एवं पिछड़ा मानने लगे।यह सोंच आज भी बदस्तूर जारी है। आधुनिक शिक्षा में नैतिक मूल्यों का निरन्तर ह्रास होता चला गया, यही कारण है कि आज के विद्यार्थियों का समाज व देश से उतना जुड़ाव नहीं है, जैसा होना चाहिए। अपनी शिक्षा पूर्ण कर उनका उद्देश्य मात्र पैसा कमाना गया, ऐसी मनोवृत्ति वाले लोग सदैव यह सोचते हैं कि हमारे माता–पिता, समाज एवं देश ने हमें क्या दिया जो हम उनकी चिंता करें मगर वह यह नहीं सोचते कि उन्होंने अपने माता–पिता, समाज और देश को क्या दिया, यह सोचनीय प्रश्न है। क्योंकि इसी शिक्षित वर्ग से ही हमारे शिक्षक बनते हैं जिनमें से अधिकांश का उद्देश्य मात्र पैसा कमाना है, समय के अनुसार शिक्षा ने भी अपनी वरीयताएं बदल दी हैं आज की शिक्षा व्यवसाय बन चुकी है एवं शिक्षक व्यवसायिक हो गया है। यद्यपि सभी शिक्षक ऐसे नहीं हैं।

बड़े दुर्भाग्य की बात है कि आज का शिक्षक जिस सम्मान और गरिमा का हकदार है वह उसे नहीं मिल पाता है ,आज के चकाचौंध से परिपूर्ण माहौल में शिक्षकों को भी अपने बच्चों को वही माहौल देना पड़ता है जो कि अन्य बच्चों को मिलता है परंतु नौकरी की मारामारी में बहुत से अच्छे शिक्षक व्यक्तिगत शिक्षण संस्थानों में शिक्षण का कार्य करते हैं जहां उन्हें न्यूनतम वेतन देकर उनकी मजबूरियों का फायदा उठाया जाता है साथ ही उनका मानसिक एवं शारीरिक शोषण होता है, यूं कहें कि एक शिक्षक अपनी कक्षा में खड़े होकर घंटों पढ़ाता रहता है और अपने खाली समय में विद्यालय के अन्य कार्यों में व्यस्त रहता है अतः उसे स्वाध्याय के लिए समय ही नहीं मिल पाता है जिससे वह कक्षा में पूर्ण तैयारी से ना जाकर आधे अधूरे ज्ञान और आधे अधूरे मन से पढ़ाता है जो कि छात्र के हित में नहीं है यही कारण है कि आर्थिक लाभ के लिए वह अतिरिक्त आय के लिए ट्यूशन एवं कोचिंग का सहारा लेते हैं।

शिक्षा एवं शिक्षक के उत्थान एवं सम्मान हेतु समाज को जागरूक करने के लिए 5 सितंबर को देश के द्वितीय राष्ट्रपति महामहिम सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के अनुरोध पर उनके जन्म दिवस को 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाया जाता है जिसमें योग्य एवं कर्त्तव्यपरायण शिक्षकों को गौरवान्वित करने के उद्देश्य से सरकारी एवं गैर सरकारी संगठन अपने अपने स्तर पर सम्मानित करते हैं। परंतु वास्तविकता यह है कि शिक्षक दिवस मात्र एक औपचारिकता है क्योंकि इस सम्मान में भी जुगाड़ और सिफारिश को आधार माना जाता है न कि शिक्षक की शैक्षिक योग्यता एवं योगदान। यह सत्य है कि राष्ट्र निर्माण में शिक्षक की भूमिका सर्वोपरि है, वह अपने स्तर पर आज भी अपने कर्तव्य का निर्वहन कर रहे हैं यदि इस कर्तव्य के पथ पर चलते हुए शिक्षक अपने विद्यार्थियों को ज्ञान के साथ–साथ नैतिक मूल्यों अपने संस्कारों से भी परिचित कराते जाएं तो निश्चित रूप से भारतीयों का भारत विश्व गुरु के रूप में होने का सपना साकार हो सकता है, आवश्यकता है शिक्षा में संस्कारों को जोड़ने की एवं शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त अनियमितताओं को दूर कर उन्हें सुधारने की। यह कार्य एक आदर्श शिक्षक ही कर सकता हैं।

मैं शिक्षक हूं शिक्षा का अक्षुण्य दीप जलाता हूं ,

मोम भांति जल कर ज्ञान का प्रकाश फैलाता हूं। चाणक्य ने कहा था निर्माण एवं विकास दोनों ही शिक्षक की गोद में पलते हैं, शिक्षक महज एक शब्द नहीं है इसमें गूढ़ अर्थ छिपा हुआ है। शिक्षक शब्द तीन अक्षरों के अलग–अलग विश्लेषण करें तो शिक्षक का अर्थ अत्यंत व्यापक है।

शि : शिल्पकार

क्ष : क्षमता वान

क : कल्याणकारी

अर्थात शिक्षक का (शि) वर्ण उन्हें कुम्हार के समान मानता है जो अपने विद्यार्थी रूपी कुंभ की सुगढ़ रचना करता है, वह एक ऐसा शिल्पकार है जो अपने हुनर और पारखी नजरों से छात्र के अंदर छिपी हुई प्रतिभा को निखारकर उसे समाज के सम्मुख उजागर करता है। सच ही है कि

गुरु कुम्हार शिष कुंभ है, गढ़ि– गढ़ि काढ़े खोट।
अन्तर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट।।

शिक्षक का (क्ष) वर्ण इंगित करता है कि शिक्षक के अंदर ऐसी क्षमता होती है जो बच्चों की गलतियां सुधार कर उनके अन्दर

छुपे हुए हुनर को पहचान कर उसे तराशता है।

शिक्षक का (क) वर्ण से तात्पर्य शिक्षक अपने छात्र का कल्याण करने वाला होता है। वह उसकी कमजोरियों को पहचान कर उन्हें दूर कर उसे सफलता के ऐसे शिखर तक पहुंचाता है जहां वह पूर्णता को प्राप्त कर सके। शिक्षक अपने छात्रों को संस्कारवान बनाने का प्रयास करता है, उन्हें किताबी ज्ञान के साथ–साथ अच्छे संस्कार भी देते रहते हैं क्योंकि बिना संस्कार के शिक्षा अपूर्ण है। भविष्य में यही संस्कारित और शिक्षित बच्चे विभिन्न पदों पर आसीन होकर अपनी योग्यता एवं शिक्षा के अनुसार देश की सेवा कर सकता है।

शिक्षक का एक कर्तव्य होता है कि वह अपने विद्यार्थियों को अनुशासित रहने की शिक्षा दें क्योंकि घर, समाज अथवा राष्ट्र सेवा में अनुशासन का महत्व पूर्ण योगदान है, बिना अनुशासन के कोई भी व्यक्ति अपने राष्ट्र निर्माण में अपना कोई योगदान नहीं दे सकता है। एक आदर्श शिक्षक अपने विद्यार्थी के अंदर देश प्रेम की भावना जागृत करने की योग्यता रखता है वह बच्चों का के अंदर देश के लिए मर मिटने का भाव जगाता है, वह इतिहास पर आधारित की कहानियों के माध्यम से छात्रों को उनके अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहने की प्रेरणा देते हैं। विद्यार्थियों को जागरूक एवं संवेदनशील नागरिक बनाने की अलख शिक्षक ही जलाता है शिक्षक अपने विद्यार्थियों को ग्रीष्म ऋतु की चिलचिलाती गर्मी, सर्दी की ठिठुरन में एवं वर्षा में भी ज्ञान की वर्षा में भिगोकर एक होनहार नागरिक बनाता है साथ ही उसका चरित्र निर्माण कर उसे संस्कारवान, देश प्रेमी एवं अनुशासित बनाता है जिससे भविष्य में एक स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकें, यही कारण है कि शिक्षक को राष्ट्र निर्माता कहा जाता है। एक शिक्षक ही शांतिपूर् ि ढंग से राष्ट्र एवं विश्व का निर्माण कर सकता है। शिक्षक अपने छात्रों को सुंदर, सुरक्षित एवं गौरवशाली भविष्य देने के लिए साथ ही संपूर्ण विश्व में शांति, एकता एवं सौहार्द स्थापित करने के लिए उसके कोमल मन मस्तिष्क में भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के रूप में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के विचारों का बीजारोपण करना चाहता है। एक आदर्श शिक्षक बालक के बाह्य व्यक्तित्व के साथ साथ आन्तरिक व्यक्तित्व के विकास में महती भूमिका निभाते हैं।

अन्त में मैं इतना ही कहूंगी कि हम सभी को अपने राष्ट्र निर्माण के कर्णधार शिक्षकों को सम्मान देना चाहिए और सदैव उनके मार्गदर्शन का अनुपालन करना चाहिए क्योंकि शिक्षक ही स्वयं मोमबत्ती की भांति जल कर समाज को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं। इसी के साथ सभी शिक्षकों से विनम्र निवेदन है कि वे भी अपनी सामाजिक दायित्व को समझते हुए अपनी नयी पीढ़ी को शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक रूप से सुदृढ़ कर उन्हें शिक्षा के साथ साथ संस्कारों से अलंकृत कर देश को आदर्श नागरिक प्रदान करें, तभी शिक्षक दिवस मनाने का उद्देश्य पूर्ण हो सकेगा और यही महामहिम राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी को सच्ची श्रद्धांजलि समर्पित होगी। ■

बन्दउँ अवध पुरी अति पावनु

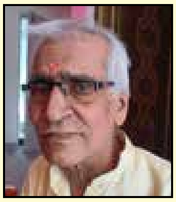

ब्रह्मेश्वर नाथ मिश्र
स्वतंत्र लेखन
बिहार

बन्दउँ अवध पुरी अति पावनु ।
जहँ अवतरेउ राम सुखभाजनु ।।
बन्दउँ दशरथ कौशिल माई ।
जेहिके घर आए रघुराई ।।
बन्दउँ भरत मातु कैकेई ।
ओढ़ि कलंक जगत हित जेई ।।
बन्दउँ लक्ष्मण मातु सुमित्रा ।
भेजेउ बिपिन राम हित पुत्रा ।।
बन्दउँ गुरु बशिष्ठ रज चरना ।।
जेहिकी कृपा काम मद हरना ।।
बन्दउँ रघुबर चरन परागा ।
जेहिमें लखन लगी अनुरागा ।।
बन्दउँ जनकसुता वैदेही ।
पति चरनन लागी जेहि नेही ।।
बन्दउँ त्यागि भरत के चरना ।
जेहिके त्याग न लागै बरना ।।
बन्दउँ लखन, रामअनुरागी ।
सीय राम हित सब सुख त्यागी ।।
बन्दउँ शत्रूघन लघु भ्राता ।
जोड़ेउ प्रीत भरत प्रिय ताता ।।
बन्दउँ अवध पुरी के लोगा ।
राम दरश करि भए अशोका ।।
बन्दउँ पावन सरयू मैया ।
जेहिमें स्नान करत रघुरैया ।।

दोहा:

ब्रह्मेश्वर की विनय सुनहु, हे रघुबीर कृपालु।
शरन चरन की राखहू, मो पर होहु दयालु ।।

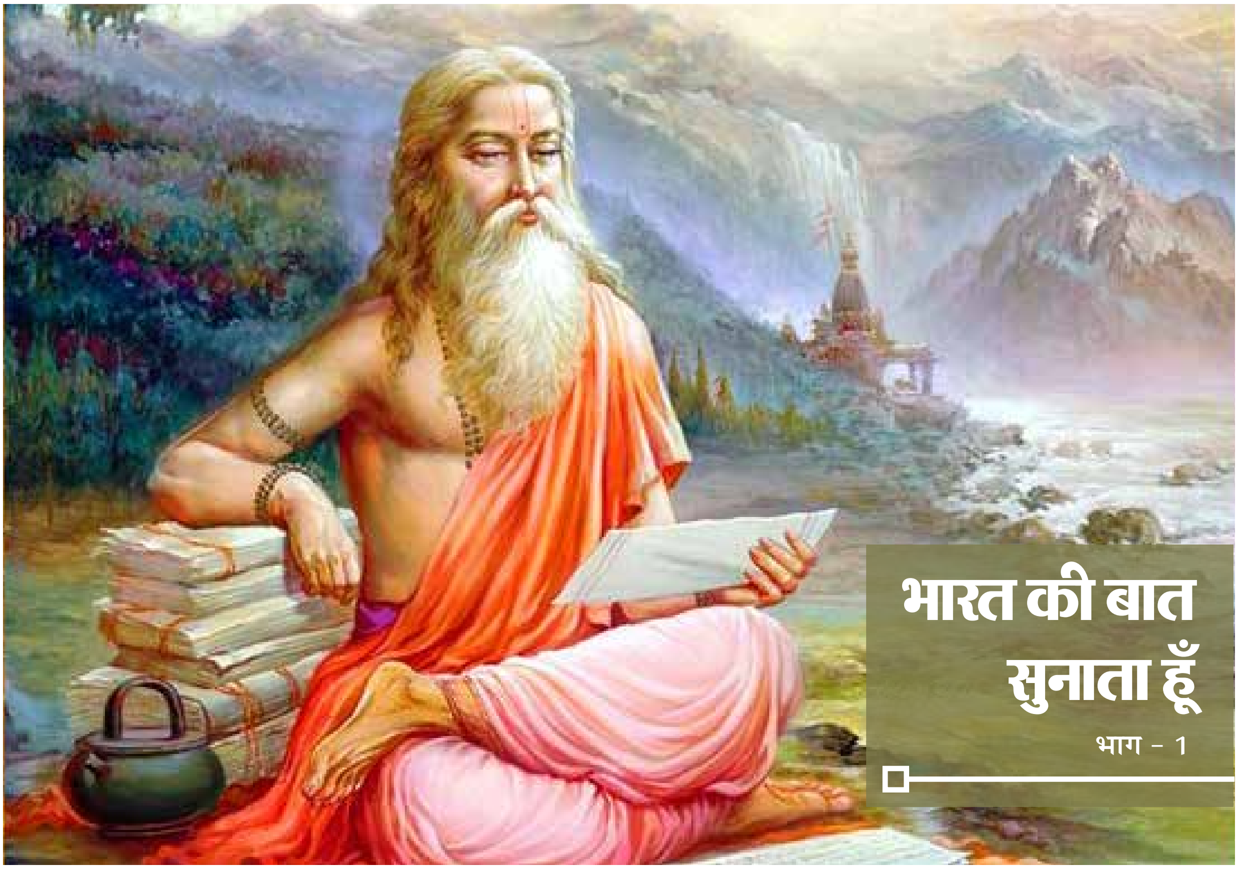

भारत की बात सुनाता हूँ

भाग - 1

डॉ. श्याम सुन्दर पाठक 'अनन्त'

लेखक, कवि, मोटीवेशनल स्पीकर,
असिस्टेंट कमिश्नर (वस्तु एवं सेवा कर)
उत्तर प्रदेश

सम्पूर्ण विश्व– पटल पर यदि किसी देश की संस्कृति ने पूर्णता एवं दिव्यता को प्राप्त किया था, सो वह था भारत – आर्यावर्त । या प्रथमा संस्कृति विश्वारा अर्थात् भारतीय संस्कृति ही विश्व की प्राचीनतम संस्कृति है। भारत के विषय में लिखा है–

" गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारत– भूमिभागे ।
स्वर्गापवर्गास्पद्मार्गभूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ।। " *(विष्णुपुराण– 2.6.24)*

अर्थात् देवगण भी गान करते हैं कि भारत की भूमि में जन्म लेने वाले लोग धन्य हैं । स्वर्ग और परमपद के समान इस देश में देवता भी देवत्व को छोड़कर मनुष्य योनि में जन्म लेना चाहते हैं ।

आखिर कुछ तो खास है इस मिट्टी में, जो स्वयं ईश्वर भी इस धरा पर बार–बार आने को लालायित रहता है । मैं आपको सुनाऊँगा– इस महान भारत भूमि की कई सुनी– अनसुनी कहानियों को, इसकी महान परम्पराओं से आपको रु–ब–रु कराऊँगा। कई ऐसे पहलुओं को आपके सामने रखूँगा कि जिन्हें जानकर आप आश्चर्य, गर्व और आनन्द से अभिभूत हो उठेंगे । आईये आपको भारत की बात सुनाता हूँ, ठीक उसी रूप में, जैसी ये भारत– भूमि है।

संस्कृति के अपने सर्वोत्कृष्ट, सर्वोच्च और सुसंस्कृत प्रवाह में एक समय भारत ने एक ऐसे युग को देखा और जीवन्त किया, जब प्रत्येक कर्म में धर्म झलकता था । जहाँ प्रत्येक निवासी मन और वचन का आधार ईश्वरीय प्रकाश था। उस काल में भारतीयों के मुखमण्डल पर देवत्व का ओज हुआ करता था, तो रक्त नलिकाओं में त्याग, सहिष्णुता और देशप्रेम दौड़ता था । मनुस्मृति उद्घोषणा करती है–

" एतद् देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षरेन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ।। "

अर्थात् सम्पूर्ण विश्व के सभी भागों से जिज्ञासू लोग ज्ञान की खोज में आर्यावर्त (भारत) में आयेंगे। देश के महान साहित्य एवं संस्कृति से नैतिकता और चरित्र का पाठ सीखेंगे ।

इतिहास गवाह है – इसी कारण अनेकानेक विदेशियों के जिज्ञासू कदम बरबस ही इस महान सांस्कृतिक भूमि की ओर बढ़ आए। जो यहाँ आया, कुछ पाने ही आया। यहाँ ही उन्हें अपनी समस्त आत्मिक जिज्ञासाओं के उचित समाधान मिले। इसलिए जो आया उसी ने भारत– भूमि को ज्ञान, संस्कृति, सत्य, नैतिकता, सभ्यता, समृद्धि सभी का असीम स्रोत घोषित कर दिया।

महान दार्शनिक शोपेनहॉवर कहते हैं– "विश्व में यदि कभी कोई सबसे प्रभावशाली व सर्वव्यापी सांस्कृतिक क्रांति आई है, तो वह केवल उपनिषदों की भूमि भारत में ।"

जर्मनी के महान इतिहासकार मैक्समूलर भी जब इस भूमि की दिव्यता से वास्तविक अर्थों में परिचित हुए तो वे अपनी पुस्तक 'India & What can it teach us' में लिखते हैं– "यदि मुझसे पूछा जाए कि इस विराट क्षितिज की छतरी तले कौन सी वह भूमि है, जहाँ मानव ने अपने अंतहृदय में बसे दैवीगुणों को पूर्णतः पुष्पित व पल्लवित किया है तो मेरी उंगली भारत की ओर ही इंगित करेगी। यदि मैं स्वयं से पूछूँ कि वह कौन सा साहित्य है, जिससे हम यूरोपवासी जो अब तक केवल ग्रीक, रोमन, तथा यहूदी विचारों द्वारा पाले– पोसे गए हैं, प्रेरणा ले सकते हैं, जिससे हमारा आत्मिक जीवन पूर्णता की ओर अग्रसर हो, भव्य बने, सच्चे अर्थों में मानवीय बने – तो मेरी उंगली फिर भारत की ओर ही इंगित करेगी ।"

ग्रीस के राजदूत मैगस्थनीज जब चन्द्रगुप्त के शासनकाल में भारत आए, तो वे भी यहाँ की महान संस्कृति से प्रभावित हुए बिना ना रह सके। उसने कहा– "रात्रि के समय भी भारत में कोई अपने मकानों में ताला नहीं लगाता। मकान के भीतर केवल चाँद की शीतल किरणें ही प्रवेश करती हैं, अन्य कोई संदिग्ध व्यक्ति नहीं।"

उपनिषद में वर्षित भारत के सम्राट कैकेय निस्संकोच दावा करते हैं कि – "न मे स्तेनो जनपदे" अर्थात् मेरे राज्य में कोई चोर नहीं है ।

आप इसी से अनुमान लगा लीजिए भारत में ईमानदारी की पराकाष्ठा की कि सोने की चिड़िया कहलाने वाले भारत के व्यापारियों तक के ईमान की सौगंध खाई जाती थी। भारत के अनेक देशों के साथ उत्तम व्यापारिक सम्बन्ध थे। इंग्लैण्ड में भी भारतीय माल विशेष रुप से निर्यात होता था। वहाँ के सौदागरों ने अपने यहाँ व्यापारिक कोठियाँ बनाई हुई थीं, जिन्हें Easterling कहते थे। इनमें भारत म्ेज से आयात हुई सामग्री रखी जाती थी। भारत से पहुँचा माल वजन और गुण में शुद्ध होता था। इसी कारण Easterling से निकले शब्दै जमतसपदह का अर्थ होता है– शुद्ध रखा गया। ये थी भारतीय व्यापारियों के माल की साख, जो शुद्ता का मानक बन गया।

ऐसा था भारत का निष्कलंक स्वरूप और उसकी अनुकरणीय संस्कृति, जिसके सामने सारा विश्व श्रद्धावत् नमन करने के लिए बाध्य हो गया था। ऐसी सांस्कृतिक व नैतिक श्रेष्ठता को प्राप्त करते हुए भारत ने, उस समय अन्य क्षेत्रों में भी पराकाष्ठा को प्राप्त किया था। कालीदास, भवभूति आदि कवियों की काव्य प्रतिभा, दण्डी और बाणभट्ट की अद्भुत लेखन शैली, ऋषि कणाद व कुम्भक के वैज्ञानिक आविष्कार, आर्यभट्ट व भास्कराचार्य का गणितीय ज्ञान, ऋषि चरक व सुश्रुत का चिकित्सीय ज्ञान, राजनीति के क्षेत्र में चक्रवर्ती सम्राटों का दिग्दिगंत विस्तार, आर्थिक क्षेत्र में सोने की चिड़िया की उपाधि, आयुर्विज्ञान, ज्योतिर्विज्ञान जैसी विद्याएँ– ये सभी प्रमाणित करती हैं कि पुरातन काल में भारत सामाजिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि सभी क्षेत्रों में पूर्ण विकसित व समृद्ध था। इतिहासकार फ्रेडरिक लुई इसका समर्थन करते हुए लिखते हैं कि– "जब यूरोप सभ्यता से कोसों दूर थे, उस समय के अवशेष जो एशियाई प्रदेशों में पाए जाते हैं, वे इस बात का प्रमाण हैं कि भारत– निवासियों ने सभ्यता के निर्माण का ठोस आधार प्राप्त कर लिया था।"

क्या था– वह ठोस आधार, जिस कारण भारत में सर्वांगीण विकास की अनुपम छटा बिखरी। यह आधार था– 'अध्यात्म'। अध्यात्म ही हमारी संस्कृति का जीवन व प्राण रहा है। श्री अरविंदो के अनुसार – "अध्यात्म भारतीय मस्तिष्क को समझने की कुंजी है।"

आगे की कड़ियों में इसी सूत्र के साथ भारत की उदात्त संस्कृति को समझने की कोशिश जारी रहेगी ।

(क्रमशः)

स्थायी स्तम्भ

डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह
भू–वैज्ञानिक, पर्यावरणविद्
एवं हिन्दी रचनाकार, पटना

पर्यावरण चिन्तन 8

वैश्विक तापन एवं जलवायु–परिवर्तन का ही दुष्प्रभाव है इस साल की असामान्य वर्षा यानी अनावृष्टि और अतिवृष्टि–प्रकोप का ताण्डव प्रदर्शित होना। जहाँ वर्षा नहीं के बराबर हुआ करती थी वहाँ मूसलाधार हो रही है और जहाँ वर्षा सामान्य रूप से होती थी वहाँ अकाल की स्थिति उत्पन्न हो रही है। इस संदर्भ में मुम्बई महानगर में घटित एक अजूबा को स्मारित किया जा रहा है। दस–पन्द्रह वर्ष पूर्व मुम्बई के बाजारों में छाता और ऊनी कपडों की बिक्री नहीं होती थी। जाड़े के दिन ठंड नहीं के बराबर रहती थी, लेकिन आज उल्टा दिखाई दे रहा है। राजस्थान के रेगिस्तान में मूसलाधार बारिश और बाढ़ का प्रकोप सामान्य हो गया है। आज से लगभग छः–सात वर्ष पहले यूरोप में लू की और अरब देश में ओले की जमकर बारिश हुई थी। मेरे स्केल में वैश्विक तापन और जलवायु–परिवर्तन का प्रदर्श था। इन दिनों हिमाचल और उत्तराखंड राज्य में भूस्खलन और बादल फटने की रफ्तार एवं तीव्रता में अजूबापन आ गया है। कतिपय कारणों पर कुछ चिन्तन प्रस्तावित है।

हिमालय को हम सदियों से संतरी और सिरताज कहते आये हैं,लेकिन यह अभी भी निर्माण की अवस्था में है, इसपर ध्यान नहीं दिये। इसकी पारिस्थितिकी को जेबीसी एवं अन्य भारी वाहनों से रोंदने लगे। हाल में इसका नतीजा जोशीमठ में देखने को मिला। इसके निचले हिस्से,जो शिवालिक अवसादी चट्टानों से निर्मित है,को पर्यटन का मैदान बनाकर धनार्जन में लिप्त हो गये। बिजली उत्पादन के वास्ते इसके नदियों पर जलाशय बना दिये। इसके जलभार से केदार धाम वर्ष 2013 में थरथरा उठा। इसकी जैवविविधता को भीड़तंत्र और शहरीकरण के हवाले कर दिये। स्वर्ग को नारकीय चादर ओढ़ाने में जुट गये। कहने का आशय यह कि हिमालय क्षेत्र की प्राकृतिकता में भौतिकता का लेप चढ़ाने लगे। यहाँ तक कि तीर्थ को उत्सवी मेला बना दिये।लाखों– करोड़ों पैरों रोंदने में लग गये। लाखों टन कचरा से पाटने के पीछे भी नहीं रहे। हिमालय भी प्रदूषित होकर अक्रान्त हो रहा है। इसका कुअसर वैश्विक तापन और मौसम पर पड़ने लगा है।

माना कि यह भारत की आस्था–भूमि है। पहले तीसरी–चौथी अवस्था वाले लोग तीर्थाटन में यहाँ आते थे। भीड़ कम होती थी। प्रदूषण नहीं के बराबर था। अब तो तीर्थाटन पर्यटन में बदल गया। उम्र का कोई परहेज नहीं रहा। पहले हिमालय पहाड़ी क्षेत्र ऋषि–मुनियों की तपस्या का, उपासना का और ऋचाओं का शान्ति वन रहा। अब तो मौज–मस्ती एवं आनन्द–उत्सव का आवासीय क्षेत्र में बदलने लगा। आवागमन का सारा समतलीय सुविधा यानी साधन पहाड़ चढ़ने लगा। कंपन और गैतिक दबाव से भूस्खलन की घटनाओं में वृद्धि होने लगी।

अन्त में यही कहा जा सकता है कि इस क्षेत्र की स्थिरता, सौम्यता,पारिस्थितिकी, जैवविविधता और स्वच्छ पर्यावरण के संरक्षण हेतु भीड़तंत्र से मुक्त रखना अनिवार्य करना होगा। भीड़तंत्र के चलते ही इस वर्ष महानगरों की नारकीय स्थिति से गुजरना पड़ा। वर्षा–जल के निकासमार्ग पर ध्यान नहीं दिये।अतिक्रमण का अवरोध खड़ा कर दिये। स्वतः का जल–मार्ग यानी नदी–नालों को कचरों से पाट दिये।

साफ–सफाई के नाम पर खानापूर्ति हुई, यह कहने में कोई हिचक नहीं। जिस अनुपात और रफ्तार से हम जन. संख्या–वृद्धि में प्रतिमान स्थापित कर सीना फुलाने लगे, उसी स्केल पर सीना में शुद्ध प्राणवायु डालने को भी सोचना पड़ेगा। सोचना जितना आसान है, करना उतना ही कठिन है, क्योंकि हमारी कार्य–संस्कृति में कालापन समा गया । विकास की दौड़ में पर्यावरण को ताॅक पर रख दिये। शहरीकरण के विस्तार में हरियाली को चट कर गये। प्राकृतिक संसाधनों का अतिदोहन करने में हैवानियत दिखाने लगे। आज मौसम साथ नहीं दे रहा, कहने में थक नहीं रहे लेकिन क्यों नहीं साथ दे रहा, पर चिन्तित और सचेत नहीं हैं। रहन–सहन में भौतिकता का त्याग करना होगा। कार्य–संस्कृति में पवित्रता लानी होगी। यही आज का चिन्तन है।

क्रमशः

14 सितंबर पर विशेष

हिन्दी दिवस

विश्व पटल पर हिन्दी के बढ़ते कदम

कृष्ण कुमार यादव
भारतीय डाक सेवा,
पोस्टमास्टर जनरल, वाराणसी परिक्षेत्र
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

किसी भी राष्ट्र की उन्नति का सीधा सम्बन्ध उसकी भाषा से होता है। भाषा ही वह तत्व है जो एक राष्ट्र को अन्य से अलग करते हुए उसे एक विशिष्ट पहचान देती है। तभी तो कहा गया कि निज भाषा उन्नति अहै, सब भाषन को मूल। भारत प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक गतिविधियों और परम्पराओं में विश्व का अग्रणी राष्ट्र रहा है। प्राचीन भारतीय चिन्तकों, ऋषि–मुनियों, विचारकों व विद्वानों ने देश में सामाजिक–सांस्कृतिक–शैक्षणिक– धार्मिक–आध्यात्मिक इत्यादि क्षेत्रों में ऐसी गतिविधियों की नींव रखी, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तान्तरित होकर अक्षुण्ण परम्पराओं के कालक्रम में सदैव जीवंत रहीं। यही कारण था कि समय–समय पर तमाम आक्रमणकारियां ने भारतीय संस्कृति पर हमला करना चाहा, पर अपनी निरंतरता और जीवंतता के चलते भारतीय संस्कृति ने उन सभी को आत्मसात् कर लिया। विश्वप्रसिद्ध तमाम विद्वानां और मनीषियों ने भारतीय संस्कृति की गहराई को परखने के लिए यहाँ आकर अध्ययन किया और इसकी महिमा अपने देशों तक फैलायी।

इकबाल ने यूँ ही नहीं कहा कि– ''सारे जहां से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा।''

भूमण्डलीकरण, उदारीकरण, उन्नत प्रौद्योगिकी एवं सूचना–तकनीक के बढ़ते इस युग में सबसे बड़ा खतरा भाषा, साहित्य और संस्कृति के लिए पैदा हुआ है। इतिहास साक्षी है कि जब–जब समाज पथभ्रमित हुआ है या अपसंस्कृति हावी हुयी है तो साहित्य ने ही उसे संभाला है। कहा भी गया है कि–'साहित्य समाज का दर्पण है।' साहित्य का सम्बन्ध सदैव संस्कृति से रहा है और हिन्दी भारतीय संस्कृति की अस्मिता की पहचान है। संस्कृत वांग्डमय का पूरा

सांस्कृतिक वैभव हिन्दी के माध्यम से ही आम जन तक पहुँचा है। हिन्दी का विस्तार क्षेत्र काफी व्यापक रहा है, यहाँ तक कि उसमें संस्कृत साहित्य की परंपरा और लोक भाषाओं की वाचिक परम्परा की संस्कृति भी समाविष्ट रही है। स्वतंत्रता संग्राम में भी हिन्दी और उसकी लोकभाषाओं ने घर–घर स्वाधीनता की जो लौ जलायी वह मात्र राजनैतिक स्वतंत्रता के लिए ही नहीं थी, वरन सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा के लिए भी थी। भारत में साहित्य, संस्कृति और हिन्दी एक दूसरे के दर्पण रहे हैं ऐसा कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा।

आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं में सर्वाधिक लोकप्रिय हिन्दी भाषा हुई। कबीर की निर्गुण भक्ति एवम् भक्ति काल के सूफी–संतों ने हिन्दी को काफी समृद्ध किया। कालांतर में मलिक मुहम्मद जायसी ने पद्मावत और गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस की अवधी में रचना कर हिन्दी को और भी जनप्रिय बनाया। अमीर खुसरो ने इसे 'हिंदवी' गाया तो हैदराबाद के मुस्लिम शासक कुली कुतुबशाह ने इसे 'जबाने हिन्दी' बताया। स्वतंत्रता तक हिन्दी ने कई पड़ावों को पार किया व दिनों–ब–दिन और भी समृद्ध होती गई। आज संसार भर में लगभग 5000 भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। उनमें से लगभग 1652 भाषाएँ व बोलियाँ भारत में सूचीबद्ध की गई हैं जिनमें 63 भाषाएँ अभारतीय हैं। चूँकि इन 1652 भाषाओं को बोलने वाले समान अनुपात में नहीं हैं अतः संविधान की आठवीं अनुसूची में 18 भाषाओं को शामिल किया गया जिन्हें देश की कुल जनसंख्या के 91 प्रतिशत लोग प्रयोग करते हैं। इनमें भी सर्वाधिक 46 प्रतिशत लोग हिन्दी का प्रयोग करते हैं अतः हिन्दी को राजभाषा को रूप में वरीयता दी गयी।

भारत में हिन्दी की अपेक्षा अंग्रेजी को वरीयता देने का एक फैशन सा चल पड़ा है। पर तमाम शोधों ने सिद्ध कर दिया है कि स्वंय ब्रिटेन तक में हिन्दी की शुरूआत प्रिंटिंग प्रेस क्रान्ति के साथ ही सोलहवीं शताब्दी के आरम्भ में ही हो गयी जबकि उस समय भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव पड़नी अभी आरम्भ ही हुई थी। सन् 1560 में ब्रिटेन में देवनागरी में छपाई का कार्य आरम्भ हो चुका था जबकि तब तक वह भारत में हाथ से ही लिखी जा रही थी। कालान्तर में जे. विल्किंसन व जार्ज फॉस्टर ने क्रमशः श्रीमद्भागवत गीता व अभिज्ञान शाकुन्तलम से प्रभावित होकर हिन्दी सीखी और उनका अंग्रेजी में अनुवाद किया। सन् 1800 के दौरान स्कॉटलैण्ड के जॉन बोथनिक गिलक्राइस्ट ने देवनागरी और उसके व्याकरण पर तमाम पुस्तकें लिखीं तो डॉ. एल.एफ. रूनाल्ड ने 1873 से 1877 तक भारत प्रवास के दौरान हिन्दी व्याकरण पर काफी कार्य किया और लंदन से इस विषय पर एक पुस्तक भी प्रकाशित करायी। सन् 1865 में एक राजाज्ञा के तहत लंदन की रॉयल एशियाटिक सोसायटी में हिन्दी सहित भारत में मुद्रित सभी भाषाओं के अखबार, पत्रिकायें व पुस्तकें आने लगीं। 1935 में बेल्जियम के नागरिक डॉ. कामिल बुल्के इसाई धर्म प्रचार के लिए भारत आए पर फ्रेंच, अंग्रेजी, फ्लेमिश, आयरिश भाषाओं पर अधिकार होने के बाद भी हिन्दी को ही अभिव्यक्ति का माध्यम चुना। अपने हिन्दी ज्ञान में वृद्धि हेतु उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. किया और तुलसी दास को अपने प्रिय कवि के रूप में चुनकर '**रामकथा उद्भव और विकास**' पर डी. फिल की उपाधि भी प्राप्त की। स्पष्ट है कि हिन्दी एक लम्बे समय से विदेशियों को भी आकर्षित करती रही है।

देश में नई पीढ़ी पर भले ही अंग्रेजी का भूत चढ रहा हो विदेशों में हिंदी की महत्ता पिछले सालों में काफी बढ़ी हैं। आज हिन्दी भारत ही नहीं बल्कि पाकिस्तान, नेपाल बांग्लादेश, इराक, इंडोनेशिया, इजरायल, ओमान, फिजी, इक्वाडोर, जर्मनी, अमेरिका, फ्रांस, ग्रीस, ग्वाटेमाला, सउदी अरब, पेरू, रूस, कतर, म्यंमार, त्रिनिदाद–टोबैगो, यमन इत्यादि देशों में जहाँ लाखों अनिवासी भारतीय व हिन्दी–भाषी हैं, में भी बोली जाती है। मॉरीशस, त्रिनिदाद– टोबैगो, सूरीनाम, गुयाना, फीजी, द. अफ्रीका जैसे देशों में 'गिरमिटिया' के रूप में गए भारतीय अपनी संस्कृति व हिन्दी को सहेजना चाह रहे हैं। विदेशों विश्वविद्यालयों ने इसे एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में अपनाया है। आज 150 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है।

अमेरिका में भाषा आधारित गणना की एक रिपोर्ट के अनुसार वहाँ 65 लाख लोग हिन्दी बोलते हैं, जबकि 8 लाख से ज्यादा लोग भारत की अन्य क्षेत्रीय भाषाएँ बोलते है। गौरतलब है कि अमेरिका में 32 विश्वविद्यालयों ओर शिक्षण संस्थानों में हिंदी की पढ़ाई होती है। अमेरिका में टेक्सास के स्कूलों में पहली बार 'नमस्ते जी' नामक हिन्दी की पाठ्यपुस्तक को हाईस्कूल के छात्रों के लिए पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। 480 पेज की इस पुस्तक को भारतवंशी शिक्षक अरूण प्रकाश ने आठ सालों की मेहनत से तैयार की है। अरूण प्रकाश 80 के दशक में पढ़ाई और व्यापार के लिए अमेरिका गए थे। 1989 में जब पहली बार उन्होंने टेक्सास के एक स्कूल में हिंदी पढ़ाना शुरू किया तो उनकी कक्षा में केवल आठ छात्र पहुँचे। इनमें से सात भारतीय मूल के थे। तभी से उन्होंने इस संबंध में प्रयास शुरू कर दिये।

ब्रिटेन के लंदन विश्वविद्यालय, कैंब्रिज और यॉर्क विश्वविद्यालय में भी हिंदी का अध्ययन होता है। जर्मनी के 15 शिक्षण संस्थानों ने हिन्दी भाषा तथा साहित्य के अध्ययन को अपनाया है। यहां कई संगठन हिंदी के प्रचार का काम करते हैं। हॉलैण्ड में 1930 से हिंदी का अध्ययन हो रहा है। आज यहाँ के चार विश्वविद्यालयों ने इसे प्रमुख विषय के रूप में अपना रखा है। चीन की बात करें तो यहां 1942 में हिंदी को अध्ययन का एक प्रमुख विषय मानने की शुरूआत हुई। चीन में पहली बार हिंदी रचनाओं का अनुवाद कार्य 1957 में शुरू हुआ और इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए बीजिंग विश्वविद्यालय के प्रोफेसर विड हान ने तुलसीदास कृत रामचरित मानस का चीनी भाषा में अनुवाद किया। इटली के लोग भी भारत की संस्कृति से रूबरू होने के लिए हिंदी सीखने की इच्छा रखते हैं। रूस में बड़े स्तर पर हिंदी रचनाओं और ग्रंथों का रूसी भाषा में अनुवाद कार्य होता है। यहां के लोगों में हिन्दी सीखने की अत्यधिक ललक है। रूसी लोग हिंदी फिल्मों और हिंदी गीतों के दीवाने हैं। फ्रांस के पेरिस विश्वविद्यालय की बात करें तो वहाँ हर साल 60–70 विद्यार्थी हिंदी अध्ययन के लिए प्रवेश लेते हैं। ऑस्ट्रेलिया के कैनबरा और मेलबर्न विश्वविद्यालय

में भी हिंदी पढ़ाई जाती है। विएना विश्वविद्यालय और बेल्जियम के तीन विश्वविद्यालयों में भी हिंदी का महत्वपूर्ण स्थान है। जापान में भी हिंदी का अहम स्थान है। जापान रेडियो से पहला हिंदी कार्यक्रम 1950 में प्रसारित हुआ था। फिजी में व्यापार, बाजार, कारखानों जैसे सभी क्षेत्रों में हिन्दी का दबदबा है। मारीशस में भी हिंदी काफी लोकप्रिय है। यहां के 260 प्राथमिक स्कूलों में नियमित तौर पर हिंदी की पढ़ाई होती है।

ऑस्ट्रेलिया के स्कूलों–कॉलेजों में भी हिंदी की पढ़ाई शामिल की जा रही है और दक्ष प्रवासी भारतीयों की इसमें मदद ली जा रही है। मेलबर्न के 'ऑस्ट्रेलिया इंडिया इंस्टीट्यूट' (एआइ.आइ) ने सरकार को सौंपी अपनी रिपोर्ट में तर्क दिया है कि स्कूलों के पाठ्यक्रम में हिंदी को शमिल किया जाए और ऑस्ट्रेलिया की एशिया नीति का यह अनिवार्य हिस्सा होना चाहिए। ऑस्ट्रेलिया के जाने–माने पत्रकार हमिश मैकडोनल्ड की रिपोर्ट में सरकार द्वारा वर्ष 2012 में पेश किये गए एशिया श्वेतपत्र में हिंदी को चार प्राथमिक भाषाओं (चाइनीज, जापानी, इंडोनेशियाई) के रूप में माना गया था।

भूमण्डलीकरण एवं सूचना क्रांति के इस दौर में जहाँ एक ओर 'सभ्यताओं का संघर्ष' बढ़ा है, वहीं बहुराष्ट्रीय कम्पनियां की नीतियों ने भी विकासशील व अविकसित राष्ट्रों की संस्कृतियों पर प्रहार करने की कोशिश की है। सूचना क्रांति व उदारीकरण द्वारा सारे विश्व के सिमट कर एक वैश्विक गाँव में तब्दील होने की अवधारणा में अपनी संस्कृति, भाषा, मान्यताओं, विविधताओं व संस्कारों को बचाकर रखना सबसे बड़ी जरूरत है। एक तरफ बहुराष्ट्रीय कम्पनियां जहाँ हमारी प्राचीन सम्पदाओं का पेटेंट कराने में जुटी हैं वहीं इनके ब्राण्ड–विज्ञापनों ने बच्चों व युवाओं की मनोस्थिति पर भी काफी प्रभाव डाला है, निश्चिततः इन सबसे बचने हेतु हमें अपनी भाषा की तरफ उन्मुख होना होगा। यदि भारतीय फिल्में विदेशों में अच्छा व्यवसाय कर रही हैं तो विदेशों में बसे भारतीयों का प्रमुख योगदान है। यह वर्ग ऐसा है जो रोजगार की खोज में विदेशों में भले ही जा बसा, पर मातृभूमि से लगाव जस का तस है। उनकी रोजी–रोटी की भाषा भले ही दूसरी हो, पर उनका मन हिन्दी में ही रमता है। हम इस तथ्य को नक्कार नहीं सकते कि हाल ही में प्रकाशित ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी शब्दकोष में हिन्दी के तमाम प्रचलित शब्दों, मसलन–आलू, अच्छा, अरे, देसी, फिल्मी, गोरा, चड्डी, यार, जंगली, धरना, गुण्डा, बदमाश, बिंदास, लहंगा, मसाला इत्यादि को स्थान दिया गया है।

अमेरिका जैसा देश भी हिंदी के प्रभाव से अछूता नहीं है। तत्कालीन अमरीकी राष्ट्रपति जार्ज बुश ने राष्ट्रीय सुरक्षा भाषा कार्यक्रम के तहत अपने देशवासियों से हिन्दी, फारसी, अरबी, चीनी व रूसी भाषायें सीखने को कहा। अमेरिका जो कि अपनी भाषा और अपनी पहचान के अलावा किसी को श्रेष्ठ नहीं मानता, हिन्दी सीखने में उसकी रूचि का प्रदर्शन निश्चिततः भारत के लिए गौरव की बात है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने स्पष्टतया घोषणा की कि–''हिन्दी ऐसी विदेशी भाषा है, जिसे 21वीं सदी में राष्ट्रीय सुरक्षा और समृद्धि के लिए अमेरिका के नागरिकों को सीखनी चाहिए।''

इसी क्रम में अगले अमरीकी राष्ट्रपति बराक हुसैन ओबामा ने भी अपने चुनावी घोषणा पत्र की प्रतियां अंग्रेजी के साथ–साथ हिन्दी और मलयालम में भी छपवाकर वितरित कीं। बराक ओबामा के राष्ट्रपति चुनने के बाद सरकार की कार्यकारी शाखा में राजनैतिक पदों को भरने के लिए जो आवेदन पत्र तैयार किया गया उसमें 101 भाषाओं में भारत की 20 क्षेत्रीय भाषाओं को भी जगह दी गई। इनमें अवधी, भोजपुरी, छत्तीसगढ़ी, हरियाणवी, माघी व मराठी जैसी भाषायें भी शामिल हैं, जिन्हें अभी तक भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में स्थान तक नहीं मिल पाया है।

इसी प्रकार जब दुनिया भर में अंग्रेजी का डंका बज रहा हो, तब अंग्रेजी के गढ़ लंदन में बर्मिंघम स्थित मिडलैंड्स वर्ल्ड ट्रेड फोरम के अध्यक्ष पीटर मैथ्यूज ने ब्रिटिश उद्यमियों, कर्मचारियों और छात्रों को हिंदी समेत कई अन्य भाषाएं सीखने की नसीहत दी है। यही नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान हिन्दी का अकेला ऐसा सम्मान है जो किसी दूसरे देश की संसद, ब्रिटेन के हाउस ऑफ लॉर्ड्स में प्रदान किया जाता है। आज अंग्रेजी के दबदबे वाले ब्रिटेन से हिन्दी लेखकों का सबसे बड़ा दल विश्व हिन्दी सम्मेलन में अपने खर्च पर पहुँचता है। स्पष्ट है कि हिन्दी आज दूसरे देशों में भी अपनी कीर्ति–पताका फहरा रही है। विदेश मंत्रालय ने इसी रणनीति के तहत प्रति वर्ष दस जनवरी को 'विश्व हिन्दी दिवस' मनाने का निर्णय लिया है, जिसमें विदेशों मे स्थित भारतीय दूतावासों में इस दिन हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया जाता है।

हाल ही में विश्व बैंक ने अपनी छवि को अधिक लोकतांत्रिक बनाने की नीति के तहत 'ओपन डाटा' नामक एक कार्यक्रम की शुरुआत की है। इसके जरिए विश्व बैंक दुनिया भर में अपनी वित्तीय पोषित परियोजनाओं की नवीनतम जानकारी एन्ड्रॉयड फोन, आईफोन और आईपैड पर मुफ्त में मुहैया कराएगा। खास बात यह है कि विश्व बैंक से जुड़ी वित्तीय जानकारियाँ अब हिंदी में भी उपलब्ध कराई जा रही हैं। अभी तक यह होता रहा है कि विश्व बैंक से जुड़े आंकड़े अंग्रेजी भाषा की समाचार एजेंसियों में आने या उनके अनुवाद के बाद ही हिंदी की पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हो पाते थे। निश्चिततः इससे हिंदी पत्रकारिता की दुनिया में एक बड़ा परिवर्तन आयेगा और हिंदी में जानकारी उपलब्ध कराए जाने से अंग्रेजी पर निर्भरता भी कम होगी।

निश्चिततः भूमण्डलीकरण के दौर में दुनिया के सबसे बडे लोकतंत्र, सर्वाधिक जनसंख्या वाले राष्ट्र और सबसे बड़े उपभोक्ता बाजार की भाषा हिन्दी को नजर अंदाज करना अब सम्भव नहीं रहा। प्रतिष्ठित अंग्रेजी प्रकाशन समूहों ने हिन्दी में अपने प्रकाशन आरम्भ किए हैं तो बीबीसी, स्टार प्लस, सोनी, जीटीवी, डिस्कवरी आदि अनेक चैनलों ने हिन्दी में अपने प्रसारण आरम्भ कर दिए हैं। हिन्दी फिल्म संगीत तथा विज्ञापनों की ओर नजर डालने पर हमें एक नई प्रकार की हिन्दी के दर्शन होते हैं। यहाँ तक कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियां के विज्ञापनों में अब क्षेत्रीय बोलियों भोजपुरी इत्यादि का भी प्रयोग होने लगा है और विज्ञापनों के किरदार भी क्षेत्रीय वेश– भूषा व रंग–ढंग में नजर आते हैं। निश्चिततः मनोरंजन

और समाचार उद्योग पर हिन्दी की मजबूत पकड़ ने इस भाषा में सम्प्रेषणीयता की नई शक्ति पैदा की है।

आज की हिन्दी वो नहीं रही..... बदलती परिस्थितियों में उसने अपने को परिवर्तित किया है। विज्ञान–प्रौद्योगिकी से लेकर तमाम विषयों पर हिन्दी की किताबें अब उपलब्ध हैं, क्षेत्रीय अखबारों का प्रचलन बढ़ा है, इण्टरनेट पर हिन्दी की बेबसाइटों में बढ़ोत्तरी हो रही है, सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कई कम्पनियों ने हिन्दी भाषा में परियोजनाएं आरम्भ की हैं। सूचना क्रांति के दौर में कम्प्यूटर पर हिन्दी में कार्य संस्कृति को बढ़ावा देने हेतु सूचना एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के प्रतिष्ठान सी–डैक ने निःशुल्क हिन्दी साफ्टवेयर जारी किया है, जिसमें अनेक सुविधाएं उपलब्ध हैं। माइक्रोसाफ्ट ने ऑफिस हिन्दी के द्वारा भारतीयों के लिए कम्प्यूटर का प्रयोग आसान कर दिया है। आईबीएम द्वारा विकसित सॉफ्टवेयर में हिन्दी भाषा के 65,000 शब्दों को पहचानने की क्षमता है एवं हिन्दी और हिन्दुस्तानी अंग्रेजी के लिए आवाज पहचानने की प्रणाली का भी विकास किया गया है जो कि शब्दों को पहचान कर कम्प्यूटर लिपिबद्ध कर देती है। एचपी कम्प्यूटर्स एक ऐसी तकनीक का विक. ास करने में जुटी हुई है जो हाथ से लिखी हिन्दी लिखावट को पह. चान कर कम्प्यूटर में आगे की कार्यवाही कर सके। चूँकि इण्टरनेट पर ज्यादातर सामग्री अंग्रेजी में है और अपने देश में मात्र 13 फीसदी लोगों की ही अंग्रेजी पर ठीक–ठाक पकड़ है। ऐसे में गूगल द्वारा कई भाषाओं में अनुवाद की सुविधा प्रदान करने से अंग्रेजी न जानने वाले भी इण्टरनेट के माध्यम से अपना काम आसानी से कर सकते हैं। आज पूरी दुनिया में ब्लॉगिंग और सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्स का क्रेज छाया हुआ है। ब्लॉगिंग में भाषा की वर्जनाएं टूट रही हैं, तभी तो हिन्दी देश–विदेश व उत्तर–दक्षिण की सीमाओं से परे सरपट दौड़ रही है। आज एक लाख से भी ज्यादा हिंदी ब्लॉग हैं। इंटरनेट पर हिन्दी का विकास तेजी से हो रहा है। गूगल से हिन्दी में जानकारियाँ धड़ल्ले से खोजी जा रही हैं। पहले जहाँ तमाम फॉण्ट के चलते हिन्दी का स्वरूप एक जैसा नहीं दिखता था, वहीं वर्ष 2003 में यूनीकोड हिंदी में आया और इसके माध्यम से हिन्दी को अपने विस्तार में काफी सुलभता हासिल हुई । इसने जहाँ वर्णमाला के जटिल शब्दों को अपने में समेट लिया है, वहीं भारत सरकार भी वेदों, उपनिषदों, पुराणों इत्यादि में प्रयुक्त होने वाले शब्दों को इसमें जोड़ने की कोशिश कर रही है। 14 सितम्बर, 2011 को सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट ट्विटर ने हिंदी में भी सीधे लिखने की सुविधा प्रदान कर दी है।

इंटरनेट के इस दौर में महत्वपूर्ण हिन्दी किताबों के ई प्रकाशन के साथ–साथ तमाम हिन्दी पत्र–पत्रिकाएं भी अपना ई–संस्करण जारी कर रही हैं, जिससे वैश्विक स्तर पर हिन्दी भाषा व साहित्य को नए आयाम मिले हैं। आज हिन्दी के वेब पोर्टल समाचार, व्यापार, साहित्य, ज्योतिषी, सूचना प्रौद्योगिकी एवं तमाम जानकारियां सुलभ करा रहे हैं। इंटरनेट पर उपलब्ध प्रमुख हिन्दी पत्रिकाएं हैं– हिंदी का पहला पोर्टल वेब दुनिया, अनुभूति, अभिव्यक्ति, सृजनगाथा, हिन्दयुग्म, रचनाकार, साहित्य कुंज, साहित्य शिल्पी, लघुकथा डॉट काम, स्वर्गविभा, हिंदी नेस्ट, हिंदी चेतना, हिंदीलोक, कथाचक्र, काव्यालय, काव्यांजलि, कवि मंच, कृत्या, कलायन, आर्यावर्त, नारायण कुंजि, हंस, अक्षरपर्व, अन्यथा, आखर (अमर उजाला), उदन्ती, उद्गम, कथाक्रम, कथादेश, गभ. िनाल, जागरण, तथा, तद्भव, तहलका, ताप्तिलोक, दोआबा, नया ज्ञानोदय, नया पथ, परिकथा, पाखी, दि संडे पोस्ट, प्रतिलिपि, प्रेरणा, बहुवचन, भारत दर्शन, भारतीय पक्ष, मधुमती, रचना समय, लमही, लेखनी, लोकरंग, वागर्थ, शोध दिशा, संवेद, संस्कृति, समकालीन जनमत, समकालीन साहित्य, समयांतर, प्रवक्ता, अरगला, तरकश, अनुरोध, एक कदम आगे, पुरवाई, प्रवासी टुडे, अन्यथा, भारत दर्शन, सरस्वती पत्र, पांडुलिपि, हिंदी भाषी, हिंदी संसार, हिंदी समय, हिमाचल मित्र इत्यादि। इसी कड़ी में 'कविता कोश' और 'गद्य कोश' ने भी हिन्दी साहित्य के लिए मुक्ताकाश दिया है। यहाँ तमाम पुराने और प्रतिष्ठित साहित्यकारों की विभिन्न विधाओं में रचनाओं के संचयन के साथ–साथ नवोदित रचनाकारों की रचनाएँ भी पढ़ी जा सकती हैं। निश्चितत: इससे हिन्दी भाषा को वैश्विक स्तर पर एक नवीन प्रतिष्ठा मिली है। यह अनायास ही नहीं है कि 51 करोड़ लोगों तक पहुँच के साथ अंग्रेजी यदि दुनिया की सबसे बड़ी संपर्क–भाषा है तो 49 करोड़ के साथ हिन्दी दूसरी संपर्क–भाषा है। कभी ब्रिटेन ने हम पर राज किया था पर जब वहीं के एक प्रोफेसर रूपर्ट स्नेल हिन्दी के पक्ष में बोलते हैं, तो गर्व होना लाजिमी भी है– "हिन्दी जिंदगी का हिस्सा है। हिन्दी जिंदा है। हिन्दी किसी एक वर्ग या वर्ण या जाति या धर्म या मजहब या मार्ग या देश या संस्कृति की नहीं है। हिन्दी भारत की है, मारीशस की है, इंग्लैंड की है, सारी दुनिया की है। हिन्दी आपकी है, हिन्दी मेरी है।"

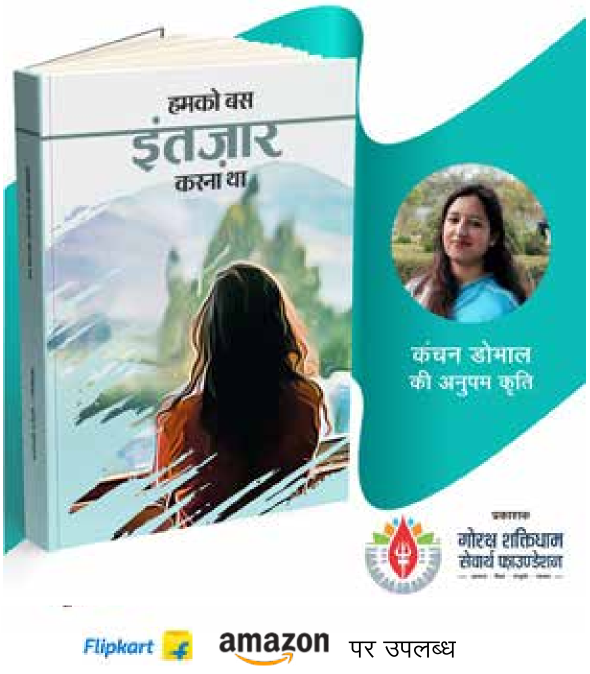

वृन्दावन की भूमि पर सारस्वत सम्मान

तृतीय

अखिल भारतीय सारस्वत सम्मान समारोह

3 दिसंबर 2023 | वृन्दावन

यह सम्मान राष्ट्र निर्माण एवं जनकल्याण को समर्पित हिंदी भाषी साहित्यकारों, शिक्षकों, चिकित्सकों, समाज–सेवकों, वैज्ञानिकों, लघु उद्यमियों, लेखकों, कवियों, पत्रकारों, शोधार्थियों अथवा अन्य विधाओं की प्रतिभाओं को प्रदान किया जाएगा, जो अपनी प्रतिभा–सेवा के द्वारा राष्ट्र की शैक्षणिक, आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक, कला एवं संस्कृति की उन्नति में अपना निरंतर योगदान दे रहे हैं।

महायोगी गोरक्षनाथ लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड– 2023

(आवेदक के लिए न्यूनतम आयु सीमा : 55 वर्ष)

यह अवार्ड विश्व में आध्यात्मिक योग ज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी महायोगी गुरु गोरक्षनाथ जी की स्मृति का सम्मानित प्रतीक चिन्ह है। यह प्रतिष्ठित अवार्ड योग्य व्यक्तियों को सम्मानित कर उनके उत्कृष्ट योगदान को मान्यता देता है, जिन्होंने अपने जीवन में संबंधित कार्य क्षेत्रों में असाधारण योगदान देकर उपलब्धियाँ अर्जित की हैं।

महायोगी गोरक्षनाथ लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड

सारस्वत सम्मान एवं लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड प्राप्तकर्ताओं को फाउण्डेशन द्वारा आयोजित भव्य समारोह में उनके सम्मान के अनुरूप एक प्रशस्ति पत्र, अंग वस्त्र और स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा ।

भारतवर्ष के समस्त प्रांतों से प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं | प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि 30 अक्टूबर 2023

For application form : Please type : “name” - “place” -”Award Name” and send it to 7415410516

मुख्य प्रायोजक

गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन

E-mail : award.gssfoundation@gmail.com
Website : www.gssfoundation.org
संपर्क सूत्र : योगी शिवनंदन नाथ | Ph. : 6266441148

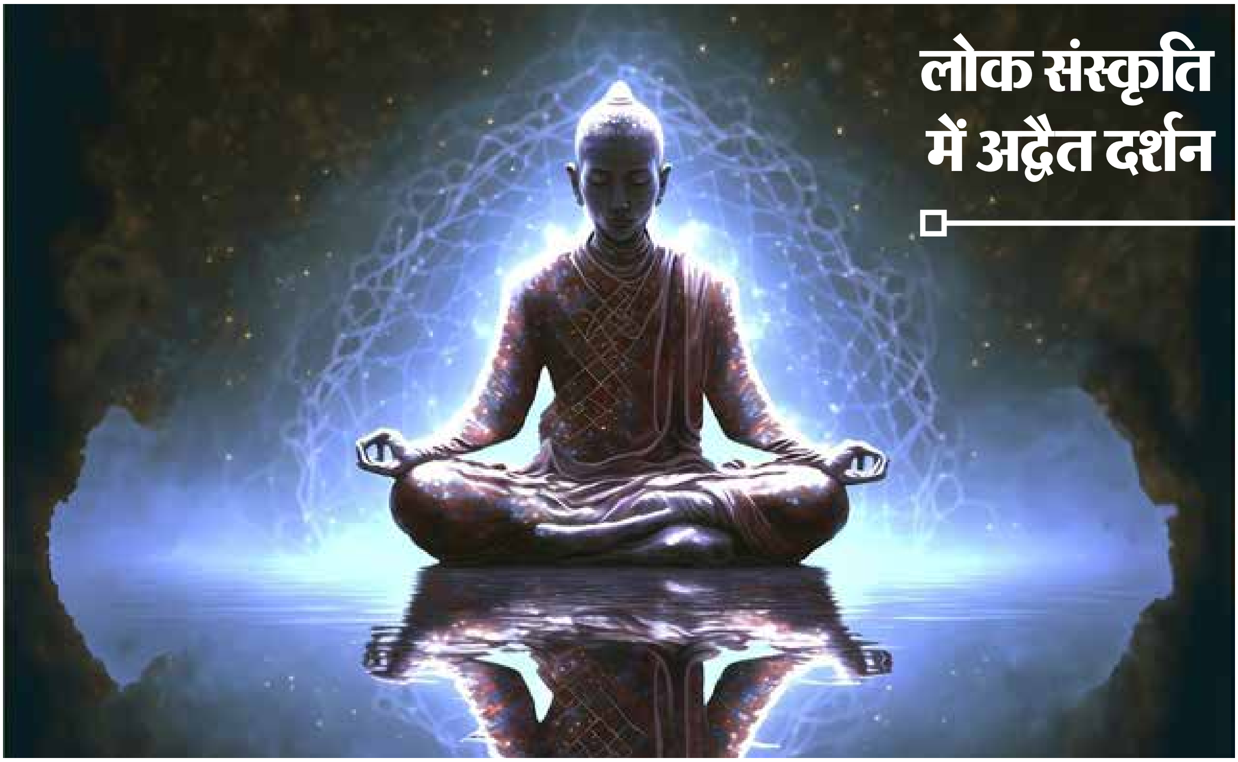

लोक संस्कृति में अद्वैत दर्शन

डॉ. अर्चना प्रकाश
स्वतंत्र लेखन
लखनऊ, ऊत्तर प्रदेश

लोक का अभिप्राय सर्वसाधारण जनता से है, जिसकी व्यक्तिगत पहचान ना होकर सामू. हिक पहचान है । दीन हीन, शोषित दलित, जंगली जातियां, कोली संथाल, नाग, हूंड़ शक, यवन, खस पुक्कस आदि समस्त समुदाय लोक समुदाय कहलाता है। इन सब की मिलीजुली संस्कृति 'लोक संस्कृति' कहलाती है।

दर्शन में इन सब का अलग रहन–सहन, अलग वेशभूषा, खानपान, अलग नृत्य गीत कौशल भाषा आदि सब अलग दिखाई देते हैं। परंतु एक ऐसा सूत्र है जिसमे सब एक माला में पिरोइ हुई मणियों की भांति दिखाई देते हैं। यही लोक संस्कृति है। जो कभी भी शिष्ट समाज की आश्रित नहीं रही। वरन यह शिष्ट समाज ही लोक संस्कृति से प्रेरणा लेता रहा।

लोक संस्कृति पर विभिन्न विद्वानों यथा डॉक्टर हजारी प्रसाद द्विवेदी डॉक्टर सत्येंद्र जी ने लिखा है कि लोक संस्कृति वह संस्कृति है जो अनुभव श्रुति व परंपरा से चलती है। इनके ज्ञान का आधार पोथी नहीं होती। भारतीय लोक संस्कृति श्रम शील समाज के संवेदनात्मक आवेगो की अभिव्यक्ति रही है। वस्तुतः धरती के हर हिस्से के मूल निवासियों ने लोक संस्कृति की रक्षा की है। लोक संस्कृति में श्रद्धा भक्ति की प्राथमिकता रहती है उसमें अविश्वास तर्क का कोई स्थान नहीं रहता। वह अंतः सलिला सरस्वती की भांति जनजीवन में सतत प्रवाहित होती रहती है। लोक संस्कृति ही सभी संस्कृतियों का बीज है। लोक संस्कृति बहुत व्यापक है, वह सब कुछ जो लोक में है लोक संस्कृति है। लोक से हर हटकर जब हम उसकी व्याख्या करते हैं तो उसकी तमाम बातें अश्लील लग सकती हैं, जैसे गालियां, किन्तु गालियां लोक के दैनिक जीवन में भरपूर प्रयुक्त होती हैं। कोई गांव शहर क्षेत्र ऐसा नहीं है होगा जहां यह गालियां प्रयुक्त ना होती हो। लोक जीवन में इनका यह महत्व है कि मन की ग्रंथि खुलकर साफ हो जाती है। लोक संस्कृति को समझना आसान नहीं है, लोक परंपरा और लोक संस्कृति में भी बड़ा अंतर है। परंपराओं में से अच्छी बातें निकल कर कालांतर में लोक संस्कृति बनती रहती हैं। क्योंकि लोक संस्कृति अंतस में रची बसी होती है। टोना टोटका भी लोक संस्कृति के अभिन्न अंग है। दैनिक जीवन में उनका प्रयोग बहुत होता है। लोक संस्कृति के निर्णायक तत्व होते हैं लोक ज्ञान, लोक रीतियां, लोक मनोरंजन एवं लोक धर्म व विश्वास। सरलता,

मौखिकता, सामूहिकता, हस्तांतरण व विविधता लोक संस्कृति के प्रमुख विशेषताएं होती है।

अब हम लोक संस्कृति में अद्वैत दर्शन की परंपरा को प्रमाणित करने का प्रयास करते हैं। अद्वैत दर्शन की नीव सर्वप्रथम गौड़प्राचार्य ने 215 श्लोकों में रची थी। इनके शिष्य शंकराचार्य ने इन श्लोको की व्याख्या की तो इसे अद्वैतवाद कहा गया। अद्वैत दर्शन और लोक संस्कृति में गहरा संबंध है अद्वैत दर्शन अपने आप में बहुत ही अनोखी अवधारणा है। अद्वैत दर्शन जीवन, मृत्यु भ्रम, अभाव, दुष्टता एवं इस वैश्विक समुदाय से मुक्ति के बारे में बताता है। अद्वैत हमें बताता है कि प्रत्येक प्राणी दो जीवन जीता है । एक वह जिसके लिए हम सोचते हैं दूसरा वह जो हम वास्तव में जी रहे होते हैं। जीवन जीने की यह उच्च स्तरीय राह ही अद्वैत दर्शन है। जीवन के छोटे–छोटे उद्देश्यों से दूर होकर जब हम एक ही राह पकड़ लेते हैं तब वह अद्वैत दर्शन हो जाता है।

अद्वैत एक विचारधारा राष्ट्रीय पहचान और नैतिकता की भावना होती है। जिसकी सीमाएं असीमित हैं, शानदार हैं। अद्वैत दर्शन का मूल सूत्र **'अहम् ब्रह्मास्मि'** है।

अद्वैत दर्शन में मोक्ष पीड़ा और पुनर्जन्म से मुक्ति का अभूतपूर्व साधन है। अद्वैत दर्शन, अद्वैत वेदान्त ने सर्वप्रथम बौद्ध धर्म से दार्शनिक अवधारणाओं को अपनाया। आदि शंकराचार्य अद्वैत दर्शन के प्रमुख प्रतिपादक माने जाते हैं ।मध्ययुगीन काल में अद्वैत वेदांत परंपरा में योग परंपरा और योग विशिष्ट तथा भागवत पुराण जैसे ग्रंथों व तत्वों का शामिल किया गया ग्रंथों को शामिल किया गया। जिसकी परिणीति स्वामी विवेकानंद के आलिंगन में हुई और योग समाधि को ज्ञान और मुक्ति के अद्वैत साधन के रूप में हुई ।

लोक संस्कृति में अद्वैत दर्शन का अत्यधिक महत्व है। आस्तिक भक्ति और उन्मुख धार्मिकता की प्रवृत्ति ही अद्वैत दर्शन का उदाहरण है। आधुनिक समय में अद्वैत विचार विभिन्न नव वेदांत आंदोलनों में दिखाई देते हैं। अद्वैत दर्शन के अनेक सूत्र प्रधान उपनिषदो, भागवत गीता और कई अन्य हिंदू ग्रंथों में पाया व माना जाता है।

अद्वैत दर्शन को सर्वोच्च दर्शन के रूप में स्थापित करने के लिए शंकराचार्य ने ब्रह्म सूत्र भगवत गीता और उपनिषद जैसे विभिन्न हिंदू धर्म ग्रंथों पर महत्वपूर्ण लेख लिखे जो अद्वैत दर्शन के विद्वानों द्वारा अध्ययन अभ्यास भी किए जाते हैं। अद्वैत दर्शन उपनिषदों की शिक्षाओं पर आत्मचिंतन की प्रेरणा देता है।

अद्वैत दर्शन लोक संस्कृति में ज्ञान प्राप्ति करने अज्ञानता को दूर करने और अन्ततः व्यक्ति के आध्यात्मिक स्वभाव को महसूस करने के साधन के रूप में आध्यात्मिक शिक्षा के महत्व को रेखांकित करता है। इसमें आध्यात्मिक शिक्षा का को शारीरिक शिक्षा पर प्राथमिकता दी जाती है।

अद्वैत दर्शन के अनुयायी मानते हैं कि उपनिषदों में अध्ययन दर्शन की पूर्ण अभिव्यक्ति है और वेदांत सूत्रों द्वारा व्यवस्थित भी है। लोक संस्कृति में आत्मवाद को श्रेय दिया जाता है और अध्यात्म को पाथेय बनाया जाता है। लोक संस्कृति में आत्म तत्व को सर्वोपरि और सर्वप्रिय माना जाता है। महल मड़ई और नगर सभी लोक जीवन में आत्मोपासना की ही प्रतिष्ठा है।

'फागुन फगुना बीत गए उधो हरि नहीं आवे मोर।
अबकी जो हरि मोरे अइ हैं, रंग खेलब झकझोरि। '

अद्वैत अध्यात्मिकता और दिव्यता इस सरस लोकगीत से छलकती है। यहां उल्लेखनीय है कि जो आस्तिक दर्शन है वह वेदों को सत्य मानते हैं, लेकिन नास्तिक दर्शन वेदों में विश्वास नहीं करते। शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन के अनुसार वास्तविक सत्ता सिर्फ एक ब्रह्म का ही है। उनके अनुसार आत्मा और ब्रह्म एक ही है।

इनके अनुसार ईश्वर ब्रह्मा का ही सगुण रूप है, जो व्यावहारिक स्तर पर भक्ति को महत्व देते हैं। शंकर के इस अद्वैत का प्रभाव सूफियों पर भी दिखता है। अद्वैत दर्शन का अहम् ब्रह्मास्मि का भाव यहां अन अल हक कहलाता है।

'कह रहा अद्वैत दर्शन ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या।
दर्शाता है कण कण भले कर ले कोई परीक्षा।
कह गए ऋषि अति पुरातन बात ये गुनियों ने मानी।
हो गए साष्टांग तुलसी सीय राम मय जगत जानी।'

इस तरह अद्वैत दर्शन संपूर्ण सृष्टि में व्याप्त है। जब पैर में कांटा चुभता है तब आंखों से पानी आता है, और हाथ कांटा तुरंत निकलता है। यह अद्वैत का उत्कृष्ट उदाहरण है। अद्वैत के संस्थापक आदि शंकराचार्य ने उपनिषद भागवत गीता और ब्रह्म सूत्र की व्याख्या लिखी। भज गोविंदम स्रोत लोक संस्कृति का है किंतु शंकराचार्य का प्रिया स्रोत था। अद्वैत दर्शन ब्रह्म की प्राप्ति के लिए त्याग व ज्ञान का मार्ग अपनाने की बात करता है। श्री मदभागवत गीता में **'सर्व धर्मान परित्यज्य माम एकम शरणम ब्रज'** के द्वारा अद्वैत दर्शन का प्रतिपादन है। अद्वैत दर्शन अद्वैत दर्शन व्यावहारिक स्तर पर भक्ति को महत्व देते हैं। को महत्व देते हैं, लेकिन वे भक्त व आराध्या में भेद स्वीकार नहीं करते।

लोक संस्कृति में दो सगुण ईश्वर है अद्वैत में वही गुणातीत व वैविध्य गुणों से परिपूर्ण निर्गुण है। उसे निराकार, निरंजन अलख इत्यादि कहकर पुकारा जाता है। ईश्वर माया से प्रभावित होते हैं जबकि ब्रह्म माया से नहीं। अनेक लोकगीतों में भक्ति काव्य में अद्वैत दर्शन मिलता है–

'निर्गुण कौन देस को वासी' (सूर),
मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई (मीरा)

तुलसी मस्तक तब नवै धनुष बाण लो हाथ रामचरितमानस गौरीशंकर सियाराम राधे कृष्ण अद्वैत के ही प्रतिपादक हैं। जननी के गर्भ से शमशान तक जीव की यात्रा सदा अद्वैत है। षोडश संस्कारों का प्रतिपादन अद्वैत के लिए है। मृत्यु के उपरांत भी **'राम नाम सत्य है'** के उद्घोष से भी अद्वैत की ही उद्घोषणा होती है।

संदर्भ –
1. वेद और अद्वैत दर्शन २०१४
2.चौतन्य प्रतिबिम्ब छाया २०१४
3.आदि शंकराचार्य वेकिपीडिया २०१६
4.जी के हिंदी नेट २०१४
5.अद्वैत वेदांत वेकी पीडिया २०१६

चिंतनीय प्रश्न

33 नहीं अब 28 साल में बच्चे को जन्म, भारत में घट रही मां बनने की औसत उम्र

डॉ. अरविंद जैन (विद्यावाचस्पति)

संरक्षक शाकाहार परिषद्
भोपाल

आजकल उच्च शिक्षित और नौकरी पेशा लड़कियां जिन्हे स्त्री कहना ही उचित हैं वे अब वैधानिक रूप से शादी के बंधन में नहीं बंधना चाहती हैं, कारण शादी उन्हें बर्बादी लगती हैं और विवाह से विवाद पैदा होता हैं, पहले पाणिग्रहण होता था जिसमे लड़का और लड़की एक काहाथ दूसरे के हाथ में रखते हैं, सौपते हैं। आजकल एक बात पर और जोर दिया जा रहा हैं की संतान पैदा करने के बाद उनके शरीर रचना में बदलाव होने से सुंदरता में कमी होने लगती हैं।

भारत में मां बनने की औसत उम्र में कमी आई है। आखिरी बच्चे के समय मां की उम्र पहले की तुलना में कम हुई है। पहले 40 से 49 साल के बीच आखिरी बच्चे को जन्म देने वाली महिलाओं की संख्या अधिक थी लेकिन अब इसमें कमी आई है। नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे की रिपोर्ट में यह बात सामने निकलकर आई है।

भारत में मां बनने की औसत उम्र घटी है। पिछले 30 वर्षो के पैटर्न को देखते हुए यह बात सामने आई है। 1992–93 में पहले राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के आंकड़ों की (2019–21) के सर्वे के साथ तुलना से यह बात सामने आई है। 2019–21 के सर्वेक्षण में शामिल महिलाओं में 11% महिलाएं ऐसी थीं जिन्होंने 40 से 49 साल की उम्र में आखिरी बच्चे को जन्म दिया। वहीं 30 साल पहले ऐसी महिलाओं की संख्या 23 प्रतिशत के करीब थी। यानी इसमें गिरावट दर्ज की गई है। नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे से पता चलता है कि जहां 1992–93 में सर्वेक्षण में शामिल 35% महिलाओं ने 30 साल की उम्र में आखिरी बच्चे को जन्म दिया। वहीं 2019–21 इस आयु वर्ग की महिलाओं की संख्या बढ़कर 64 फीसदी हो गई। यानी 30 साल की उम्र में ही आखिरी बच्चे को जन्म दिया। इसी अवधि में जन्म के समय औसत आयु में 5 वर्ष की गिरावट आई है, जो 33 वर्ष से घटकर 28 वर्ष हो गई है।

इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर पॉपुलेशन स्टडीज के शोधकर्ताओं की ओर से की गई स्टडी के मुताबिक 40 साल की उम्र में आखिरी बच्चे को जन्म देने वाली महिलाओं की संख्या में कमी आई है। स्टडी में इस बात का जिक्र है कि शादी के तुरंत बाद बच्चा पैदा करने का दबाव परिवारवालों की ओर से रहता है। वहीं अशिक्षित महिलाओं में गर्भनिरोधक उपायों की जानकारी और फैमिली प्लानिंग जैसे विषयों को न जानने की वजह से भी कम उम्र में प्रेगनेंसी के मामले बढ़ जाते हैं। एनएफएचएस–III (2004–05) के सर्वे के दौरान अंतिम बच्चे के जन्म के समय औसत आयु तमिलनाडु में 26 वर्ष से लेकर मेघालय में 33 वर्ष तक थी, लेकिन अगले दो सर्वेक्षणों में, आंध्र प्रदेश में सबसे कम (लगभग 25) और मेघालय में (30 से अधिक) थी। स्टडी में यह बात भी सामने आई है कि आखिरी बच्चे की मां बनने वाली महिलाओं की शादी 15 साल पहले हुई थी। पहले के आंकड़ों से पता चलता है कि 1970 के दशक के दौरान बच्चे के पहले जन्म के समय मां की उम्र कम थी। इनमें अधिकांश महिलाएं कम उम्र में ही मां बनीं। साथ ही 39 से 42 वर्ष के बीच ऐसी महिलाओं की संख्या अधिक थी जिन्होंने आखिरी बच्चे को जन्म दिया। इसका नतीजा था कि देश में तेजी से प्रजनन दर में वृद्धि हुई थी। हालांकि, हाल के वर्षों में, अधिकांश देशों में बच्चे को जन्म देने वाली युवा महिलाओं की संख्या में कमी देखी गई है। ऐसा महिलाओं में शैक्षिक स्तर बढ़ने और परिवार नियोजन के तरीकों में बदलाव के कारण हुआ है।

परिवर्तन

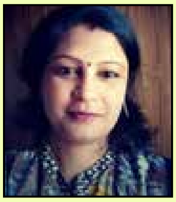

सुजाता प्रसाद
लेखिका,
शिक्षिका सनराइज एकेडमी
मोटिवेशनल ओरेटर
नई दिल्ली

झर जाते हैं पत्ते झर झर के पतझड़ के हौले हौले
फिर आता है बसंत, उपवन विहंस कर खिल जाता है।
हिना का एक एक पत्ता शिलाओं पर घिस कर
छोड़कर रंग हरा, हथेली पर सुर्ख बिखर जाता है।
सिर धड़ विलग के, टूटे कितने खिलौने छुटपन के
पर अंदर का बचपन बोलो कब खो पाता है।
किसी शय को दुबारा देखा नहीं जाता है
हर बार खामोशी से मंजर बदल जाता है।
बार बार परिवर्तन के मुश्किल कूचों से
कैनवास जीवन का रंगों से निखर जाता है।

भजन

– भीम सिंह नेगी
बिलासपुर
हिमाचल प्रदेश

कुन्ज गली मैं खेलन गई
वहां पर मिल गये श्याम जी
बहुत सोचा घर वापस जाऊं
मगर हो गई सुबह से शाम जी

ऐसी लगन प्रभु संग लागी
भूल गई सारे काम जी
कुन्ज गली मैं खेलन गई
वहाँ पर मिल गये श्याम जी
बहुत सोचा घर वापस जाऊं
मगर हो गई सुबह से शाम जी

गली–गली होने लगे चर्चे
श्याम संग जुड़ गया नाम जी
कुन्ज गली मैं खेलन गई
वहाँ पर मिल गये श्याम जी
बहुत सोचा घर वापस जाऊं
मगर हो गई सुबह से शाम जी

घर लौटी तो ऐसा लगा
जैसे सुख पा गई तमाम जी
कुन्द गली मैं खेलन गई
वहाँ पर मिल गये श्याम जी
बहुत सोचा घर वापस जाऊं
मगर हो गई सुबह से शाम जी

दोस्त बेशक एक हो लेकिन ऐसा हो जो अलफ़ाज से ज्यादा खामोशी को समझे।

सात्विक चेतना का दायित्वबोध

अनुकूलता की उलझन और अहम् के अंतर्द्वंद से उबरने का साहसिक प्रयास

डॉ. अजय शुक्ला
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड
डायरेक्टर, स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर
देवास, मध्य प्रदेश

कर्त्तव्यमूलक मन:स्थिति: जीवन के व्यावहारिक स्वरूप में सात्विक चेतना के द्वारा गतिशीलता प्राप्त करते हुए नित–नूतन उपलब्धियाँ अर्जित करना श्रेष्ठ स्थिति का परिचायक होता है। व्यक्तिगत् स्तर पर जब दायित्वबोध की मन:स्थिति निर्मित होती है तब अन्तर्जगत् का वास्तविक आभामंडल अपनी सशक्त भूमिका निभाने के लिए तत्पर हो जाता है। कर्मक्षेत्र के अन्तर्गत् सम्पूर्ण निष्ठा का विनियोजन करते समय यदि प्रतिफल की अपेक्षा से स्वयं को मुक्त रखा जाए तो निश्चित ही बोझिल मानसिकता से सुरक्षित रहा जा सकता है। कई बार 'मैं की उपस्थिति और मेरे द्वारा कार्य की पूर्णता के अहसास' से उपजी चिंता व्यक्तिगत् जीवन के लिए दु:खद परिस्थितियाँ उत्पन्न कर दिया करती हैं। चेतना की सात्विकता का प्रभाव व्यक्तिगत् जीवन में विरोधाभासी मन:स्थिति से स्वयं को उबारने हेतु विभिन्न प्रकार के साहसिक कदम उठाने की चेष्ठा निरन्तर किया करता हैं। सामान्त: व्यक्तिगत् चेतना के संदर्भ में सहजतामूलक प्रवृत्ति को स्वीकार करने का प्रचलन सामाजिक स्तर पर जारी है जिसमें ' जो कुछ हो रहा है अथवा हो जाने की स्थिति में है ' उसी व्यवस्था को जैसी वह प्रतीत हो रही है उसके अनुरूप स्वयं को ढाल लेने का मनोभाव आज वृह्द स्तर पर परिलक्षित होता है। अन्त:करण की सात्विक चेतना व्यक्ति को कर्मगत् स्थितियों के लिए सदा वास्तविक प्रयास की ओर अभिप्रेरित करती है जिससे कर्त्तव्यमूलक मन:स्थिति का निर्माण सुनिश्चित हो सके। जीवन के विविध पक्ष और उनसे सम्बद्ध परिस्थितियों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन यह बताने में आज सक्षम है कि व्यक्तिगत् स्वभाव की नकारात्मक स्थितियाँ व्यक्ति को सात्विक चेतना के दायित्वबोध से कोसों दूर कर दिया करती हैं। स्वयं को कर्म के विभिन्न सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक मानदण्डों के अन्तर्गत् रखते हुए बचाव करने की समस्त कोशिशें वहाँ असफल हो जाती है जहाँ व्यक्ति के भीतर अपराध बोध का भाव प्रबलता के साथ मुखरित हो जाता है। यदि विविध कर्त्तव्यों की विवेचना और उसका विधिवत मूल्याँकन किया जाए तो यह ज्ञात हो जाता है कि व्यक्तिगत् मन:स्थिति में कहीं न कहीं इस बात का सूक्ष्म दबाव रहा जिसमें स्वयं के अनुसार

परिस्थितियों में परिवर्तन हो जाने की संभावना को तलाशने की आशा अन्ततः अन्तर्मन में विद्यमान रही। जब विशिष्ट दृष्टिकोंण को ध्यान में रखते हुए कर्मक्षेत्र में प्रविष्ठ होने की स्थितियाँ निर्मित होती है तब किसी न किसी स्थिति में अहम् का अन्तर्द्वन्द आपसी विवाद का कारण बन जाया करता है।

सामान्यतः व्यक्ति जीवन की आनंददायी स्थितियों की ओर अग्रसर होना चाहता है तथा वह इसके लिए अपनी समस्त क्षमताओं के साथ प्रयास भी करता है लेकिन सात्विक चेतना के दायित्वबोध तक नहीं पहुँच पाने की वजह से भ्रमपूर्ण जीवन को सबकुछ मानकर उलझ जाता है। किसी साधारण प्रयास के माध्यम से व्यक्तिगत् विकास की परिकल्पना को साकार करने का स्वप्न देखना किसी ठोस परिणाम का कारक नहीं हो सकता है जब तक व्यक्ति सात्विक चेतना की धुरी पर स्वयं को स्थापित करते हुए दायित्वबोध का व्यावहारिक धरातल पर आत्मसात न कर सके।

निष्पक्ष विचारधारा: व्यक्तिगत् चिंतन के व्यापक परिवेश का अवलोकन करने पर यह ज्ञात हो जाता है कि विभिन्न परिस्थितियों में व्यक्ति की विचारधारा किस दिशा की ओर अभिमुखित है। सामान्य तौर पर व्यक्ति यह स्वीकार करते हुए गतिशील रहता है कि उसके द्वारा जो कुछ सोचा जा रहा है वह उचित है अथवा उसकी समझ जिस स्तर तक कार्य कर रही है लगभग वह ठीक है। यदि किसी व्यक्ति द्वारा निजी स्तर पर वैचारिक सहयोग प्रदान कर दिया जाता है और दूसरे व्यक्ति को किसी कारण से इस विचार को व्यक्तिगत् रूप से अपनाना पड़ता है तो उस स्थिति में प्रायः यह तर्क दिया जाता है कि मैं भी पहले यही सोच रहा था। विचारगत् भूमिकाओं के संदर्भ में जब कभी स्वयं की तर्क शक्ति के माध्यम से किसी अन्य परिस्थिति के लिए किसी विचार को पहुँचाने की बात आती है तब अन्तःकरण में सदा यह दबाव बना रहता है कि जो कुछ मेरे द्वारा व्यक्त किया जा रहा है वह किसी भी स्थिति में दूसरे पक्षकार को स्वीकार करते हुए व्यावहारिक रूप से अमल करना चाहिए। आपसी विवाद की स्थितियाँ किस प्रकार से जीवन की समरसता को खण्डित कर देती हैं यह किसी व्यक्ति से आज तक छिपा नहीं है उसके बावजूद भी वैचारिक आदान-प्रदान के तरीकों में बदलाव की कोशिश को व्यावहारिक स्तर पर सुनिश्चित नहीं करने की स्थिति आज भी विद्यमान है। प्रायः सामाजिक सद्भाव तथा वैचारिक स्वीकारोक्ति के कई उदाहरण अत्यन्त विश्वसनीयता के साथ विभिन्न परिस्थितियों के अन्तर्गत् परिलक्षित होते हैं जिसमें विचारगत् सम्प्रेषण के पूर्व एवं पश्चात् किसी भी प्रकार की उलझन और इससे सम्बद्ध अन्तर्द्वन्द प्रकट नहीं होते हैं। जीवन की सच्चाई को जिस प्रकार से आत्मसात करने का पुरूषार्थ किया जाता है उसी तरह व्यक्ति की विचारधारा परिपक्व अवस्था की ओर बढ़ने लगती है और धीरे-धीरे निष्पक्षता के मानदण्डों पर खरी उतरने की स्थितियाँ बनने लगती हैं।

जब व्यक्तिगत् अथवा सामाजिक स्तर पर मानवीय पक्षधरता के प्रति जिम्मेदारी का अहसास किया जाता है उस समय वैचारिक सहयोग का स्वरूप सात्विक चेतना के दायित्वबोध से प्रस्फुटित होता है। स्वार्थपूर्ण स्थितियों के लिए कार्यरत मनोभावों में परिवर्तन करते हुए निष्पक्ष विचारधारा की दिशा में सतत् प्रयासरत रहने की आवश्यकता को समझना होगा तभी अहम् के अन्तर्द्वन्द से निकलने की स्थितियाँ निर्मित हो सकेंगी। जीवन के निजी एवं सार्वजनिक पक्षों के लिए निष्पक्ष विचारधारा किसी बाध्यकारी निर्णयन के फलस्वरूप उत्पन्न स्थिति नहीं है अपितु मानवीय शुचिता के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोंण स्थपित करने की महत्वपूर्ण पहल है। सामाजिक उपयोगिता के सिद्धांत को जब व्यावहारिकता कर कसौटी पर रखने की बात होती है उस स्थिति में केवल निष्पक्ष विचारधारा के योगदान पर बल दिया जाता है क्योंकि इसके मूलभूत स्रोत में सात्विक चेतना का दायित्वबोध नीहित रहता है।

सक्षम मानसिकता: कर्मगत् स्थितियों के अन्तर्गत् स्वयं की साधना को एक सुनिश्चित साध्य के लिए समर्पित कर सिद्धि प्राप्त कर लेना और इस विशिष्ट शक्ति के द्वारा कल्याणकारी कार्यो को पूर्ण करना सक्षम मानसिकता के प्रति वास्तविक आभारयुक्त दायित्वबोध का प्रमाण है। जीवन में जितनी भी प्राप्तियाँ मनुष्य के द्वारा एकत्रित की जाती हैं उनका सही उपयोग अत्यन्त आवश्यक होता है क्योंकि व्यवहारगत् विवेचनाएँ सदैव एक दूसरे के पूरक स्वरूप में गतिमान होती हैं जिसमें प्राप्ति एवं प्रदान के साथ पुर्नविनियोजन के क्रम एक स्थिति के पश्चात् घटित होते रहते हैं। जब कभी व्यक्तिगत् मनःस्थिति में संकुचित सोच विद्यमान हो जाती है तब यह अहसास होने लगता है कि 'जो कुछ मैनें जोड़ा है वह सब मेरा है अथवा किसी और के पास जितना है वह उसका है' जबकि प्राकृतिक सिद्धान्त के अनुसार किसी का कुछ भी नहीं है बल्कि सामान्य व्यवहार के लिए प्रदत्त स्थूल एवं सूक्ष्म का मिश्रित स्वरूप है जिसे साधन एवं शक्ति के नाम से स्वीकार करते हुए अपना और पराया समझने की भूल निरन्तर जारी है। वर्तमान परिदृश्य का मूल्याँकन करने पर यह आभास हो जाता है कि सक्षम मानसिकता की स्थितियाँ आज न्यूनतम् हो गयीं हैं तथा यदाकदा कहीं परिलक्षित होती भी हैं तो उन्हें सामाजिक अपवाद की श्रेणी में रखते हुए उनसे विमुख होने का प्रयास किया जाता है। व्यक्तिगत् जीवन में जब सात्विक चेतना का प्रवाह होने लगता है तब स्वयं के प्रति संवेदनशीलता का बढ़ना एक स्वाभाविक स्थिति होती है जिसमें निजी एवं सार्वजानिक जीवन की जिम्मेदारी का ठोस आधार समाहित होता है। जीवन के किसी परिवेश के अन्तर्गत् दायित्वबोध उत्पन्न होना तथा उसके व्यावहारिक स्वरूप में कार्य करना वास्तविक रूप से व्यक्तिगत् एवं सामाजिक जीवन की श्रेष्ठ उपलब्धि होती है जिनकी बढ़ोत्तरी हेतु सदैव सहयोगात्मक व्यवहार का योगदान देने का प्रयास करते रहना चाहिए। यदि सक्षम मानसिकता को आत्मसात करना है

दीर्घकालीन गतिशीलता: सिद्धान्त और व्यवहार के मध्य उत्पन्न जिस अन्तराल को न पाट पाने की कल्पना व्यक्ति के माध्यम से की जाती है वह निश्चित ही स्वार्थपूर्ण स्थिति से जुड़ी कोई मनःस्थिति है जो किसी न किसी रूप में बाधक बनकर जीवन की गतिशीलता को खण्डित कर देती है। सामान्यतः व्यक्तिगत् स्तर पर यह दावा किया जाता है कि मुझे किसी भी स्थिति में कोई परेशानी नहीं होती अथवा किसी छोटी-बड़ी समस्या के आने

पर मैं कभी डगमग नहीं होता और बिना किसी दबाव या तनाव के आगे बढ़ जाया करता हूँ। यदि जीवन में सात्विक चेतना के दायित्वबोध को अनुभूति तथा व्यवहार के स्तर पर स्वीकार कर लिया जाए तो निश्चित ही स्वयं से उपजी उलझन और अहम् के अन्तर्द्वन्द के लिए कोई स्थान मन, बुद्धि एवं हृदय में शेष नहीं रह जाएगा। सामाजिक जीवन के अन्तर्गत् जिन मानवीय प्रवृत्तियों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया गया है उनमें इस बात का स्पष्टीकरण उल्लेखित है कि व्यक्ति की दीर्घकालीन गतिशीलता में कर्त्तव्य एवं दायित्वबोध के साथ कर्मगत् व्यवहार की कुशलता हेतु सकारात्मक दृष्टिकोंण की उपस्थिति विद्यमान रहती है जिससे श्रेष्ठ स्थितियों के क्रियमाण को सुनिश्चित किया जा सके। जीवन की गतिशीलता उस समय अवरूद्ध हो जाती है जबकि व्यक्ति के द्वारा सात्विक चेतना के प्रति अनदेखा व्यवहार आरम्भ कर दिया जाता है जिसमें कई बार दायित्वबोध को जानबूझकर नकारने की प्रवृत्ति सम्मिलित रहती है। सफल होने जीजिविषा व्यक्ति को निरन्तर प्रयास की प्रेरणाएँ प्रदान करती रहती हैं और किसी कारण असफलता हाथ लगी तो पुनः सफलता का उत्साह मन में जागृत करते हुए आगे बढ़ने की चेष्टा उत्पन्न कर दिया करती हैं जिससे व्यक्ति की दीर्घकालीन गतिशीलता को बनाये रखने में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मदद मिलती रहती है। जब कभी स्वयं को दीर्घकालीन गतिशीलता के अन्तर्गत् समाहित करने की स्थितियाँ निर्मित होती हैं तब निश्चित ही असीम धैर्यता के गुणों का समायोजन व्यक्तित्व को किन्हीं परिस्थितियों में विचलित नहीं होने देता है क्योंकि उपलब्धियों की प्राप्ति के परिदृश्य में इस गुण का विशिष्ट योगदान होता है। किसी महान उद्देश्य की प्राप्ति हेतु अल्पकालीन प्रयास से कार्य सिद्धि के योग नहीं बनते बल्कि स्वयं के जीवन में दीर्घकालीन गतिशीलता को स्थापित करने की संकल्पना और व्यवहार कुशलता में दायित्वबोध के द्वारा निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करने की स्थितियाँ निर्मित हो जाती हैं।

पारदर्शी जीवन: परिवर्तन के प्रति संवेदशील दृष्टिकोंण की उपयोगिता किसी भी युग में सम्माननीय होती है क्योंकि जीवन के विविध पक्षों में यथोचित बदलाव की स्थितियों को अपनाने से सामन्जस्यपूर्ण मनःस्थिति का निर्माण हो जाता है। जब व्यक्तिगत् जीवन में सात्विक चेतना का दायित्वबोध अनुभूति के रूप में प्रस्फुटित होता है तो कर्मगत् स्थितियों में नवीनता का समावेश स्वतः हो जाता है। वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन यह बताता है कि व्यक्तिगत् जीवन का निर्वहन करना अत्यधिक चुनौतीपूर्ण स्थिति का पर्याय बनकर रह गया है जिसमें कर्त्तव्य एवं अधिकार के मध्य विवाद को सुलझाना कठिन होता जा रहा है। जीवन में श्रेष्ठ संकल्पित मनोभाव को आत्मसात करने की उत्कण्ठा मानवीय चित्त में सदा विद्यमान रहने से व्यक्तिगत् चिन्तन की स्थिति को विचारगत् स्वरूप में स्वीकार करना संभव हो जाता है जिससे सम्पूर्ण व्यवहार में परिष्कार की मनोकामना को पूर्ण किया जा सकता हैं। प्रायः इस बात की अभिलाषा सभी व्यक्तियों में होती है कि उनकी मानसिकता का स्तर इतना सक्षम हो जाए कि उन्हें जीवन में शुचिता की ओर अग्रसर होने का अवसर प्राप्त हो और वे स्वयं को पारदर्शी व्यवहार से सम्बद्ध कर सकें। विभिन्न परिस्थितियों की वजह से व्यक्तिगत् जीवन की दीर्घकालीन गतिशीलता में बाधक बन गयी स्थितियों को सात्विक चेतना के दायित्वबोध से व्यावहारिक स्तर पर समाप्त किया जा सकता है। सामान्यतः स्वयं के प्रति उदासीन व्यवहार की वजह से इस बात का मूल्याँकन करना सहज नहीं हो पाता है कि आखिर व्यक्तिगत् जीवन में घटने वाली समस्त घटनाएँ और उनके प्रति अनुकूलता से युक्त दबाव किसी व्यक्ति के लिए कितनी बड़ी उलझन हो सकती है। हाँलाकि निजी स्तर पर किये जाने वाले संवेदनशील व्यवहार के प्रति जागृत चेतना का भाव व्यक्ति को यह समझाने में धीरे–धीरे सफल होता जा रहा है कि जीवन में सभी कुछ अपने अनुसार घटित एवं फलित नहीं होता है। मानवीय व्यवहार के सम्बन्ध में जितने भी दृष्टिकोंण बनाये गये हैं उनमें प्रायः सभी के अन्तर्गत् इस बात की स्वीकृति मिल गयी है कि विपरीत परिस्थितियों से निकलने के लिए अन्ततः अहम् के अन्तर्द्वन्द से मुक्ति प्राप्त करनी होगी तभी सकारात्मक व्यवहार की दिशा में सार्थक कदम उठाना संभव हो सकेगा। जीवन की पारदर्शी स्थिति के लिए सभी व्यक्तियों द्वारा यथा शक्ति एवं योग्यता के अनुसार पुरूषार्थ किया जाना एक स्वाभाविक प्रक्रिया के तहत घटित होता रहता है परन्तु आन्तरिक मनोवृत्तियों का सूक्ष्म दबाव सात्विक चेतना के दायित्वबोध को व्यावहारिक स्तर पर सम्पूर्ण परिवर्तन की स्थिति निर्मित करने में कहीं न कहीं बाधक बन जाया करता है। स्वयं की सत्यता को छुपाने के लिये विभिन्न भावनाओं एवं तर्कों से आच्छादित कर लेने की चतुराई भले ही दूसरों को संतुष्ट कर देने का कारक बन जाए लेकिन वहाँ पर स्वयं की स्पष्ट समझ के लिए किसी गुँजाईश की स्थिति शेष नहीं रह जाती है जिसमें कुछ समायोजित कर लेने का उपाय किया जा सके। अतः पारदर्शी जीवन के लिए स्वयं की स्वभावगत् प्रवृत्तियों को, निजता की उलझन से निकालकर स्थायी रूप से स्थिर हो चुकी अहम् के प्रति आस्था पर कुठाराघात करते हुए समस्त अन्तर्द्वन्दों से उबरने का साहसिक प्रयास तभी सफल हो सकेगा जब सात्विक चेतना के दायित्वबोध को अनःकरण से अंगीकार कर लिया जाएगा। ■

॥ श्रीमद्भर्तृहरिविरचितं नीतिशतकम् ॥

॥ब्रह्म को नमस्कार॥

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तये।
स्वानुभूत्येकमानाय नमः शान्ताय तेजसे ॥

'जो पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिणादि दिशाओं और भूत, वर्तमान तथा भविष्यत् आदि काल से अपरिमेय है, जो विनाशरहित तथा ज्ञानस्वरूप है और जिसके अस्तित्व का एकमात्र प्रमाण मनुष्य का अपना अनुभव ही है, उस शान्तिमय ज्योतिस्वरूप ब्रह्म को नमस्कार है।,

– संकलनकर्ता : आशागंगा प्रमोद शिरढोणकर, उज्जैन

हे हनुमान

व्यग्र पाण्डे
माधोपुर (राजस्थान)

हे हनुमान हे अंजनी सुत
श्रीराम भक्ति के मतवाले
हे महाबली हे देहगिरि
हे भक्तों के प्रिय रखवाले
हो दुष्टों के संघारक तुम
जन जन के हो तारक तुम
है शील विनय सेवा तुममें
श्रीराम कथा के धारक तुम
हे पवनपुत्र केशरीनंदन
लख तुम्हें दुष्ट करते क्रंदन
ना प्रिय कोई तुमसे बढ़कर
कहते रहे रघुकुलनंदन
कलियुग के तापों के हरता
सुख पाता जो तुमको जपता
सबके इष्ट करते अभिष्ट
दोष निवारक गुण भरता

मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन की मासिक ई–पत्रिका

क्या आपकी लेखन में अभिरुचि है?

क्या आप भी कभी अपने विचारों, भावनाओं को व्यक्त करने के लिए कागज – कलम उठाते हैं?
क्या आप लेखक/लेखिका, कवि/कवियत्री है?

आपको **अध्यात्म संदेश** ई पत्रिका की ओर से आमंत्रण है, आप अपनी रचनाएं, कविताएं, गीत, लघु कथाएं हमें प्रेषित करें। आपकी रचनांए आलेख प्रकाशन योग्य होने पर उसका पत्रिका में अवश्य प्रकाशन किया जाएगा।

अपनी रचनायें हमें प्रेषित करते समय यह अवश्य सुनिश्चित करें कि यह रचना आपकी अपनी मौलिक कृति है और न तो यह किसी पत्र – पत्रिका – पुस्तक – ब्लॉग – वेबसाइट आदि में प्रकाशनार्थ विचाराधीन है और न ही कभी प्रकाशित हुई है।

आपकी रचना को मूल रूप में प्रकाशित/संपादित रूप में प्रकाशित करने अथवा प्रकाशित न करने का पूर्ण विवेकाधिकार संपादक मंडल का है।

आलेख भेजने की अंतिम तिथि 15 सितम्बर 2023

विशेष : शब्द सीमा 500–750 शब्दों के मध्य होनी चाहिए

1. लेखक/लेखिका अपनी रचना यूनिकोड/कृतिदेव – वर्ड फाइल में टाइप कराकर ही भेंजे। पी. डी. एफ फाइल न भेजें।
2. लेखक/लेखिका अपनी स्वरचित अप्रकाशित एवं मौलिक रचना के साथ कृपया अपना संक्षिप्त परिचय, व्हाट्सप नंबर, फोटो के साथ भेजें ।
3. आपकी स्वीकृत रचना आपके फोटो के साथ प्रकाशित की जायेगी। प्रकाशित रचना पर पारिश्रमिक देय नहीं है।
4. जनकल्याण हित में ज्ञान वर्धन हेतु यह ई पत्रिका पूर्णत: नि: शुल्क है। अपनी रचनाएँ ई–मेल: **editor.adhyatmsandesh@gmail.com** पर प्रेषित करें।

– योगी शिवनन्दन नाथ
प्रधान संपादक

स्वतंत्र देश की परतंत्र वाणी

डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम
स्वतंत्र लेखन
योग. प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ
(आयुर्वेद रत्न)
कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश

जब भारत स्वतंत्र हुआ था, तो बी.बी.सी. लंदन ने महात्मा गांधी से विश्व के नाम एक संदेश देने के लिए कहा था। तब महात्मा गांधी का उत्तर था कि विश्व से कह दो कि गांधी अब अंग्रेजी नहीं जानता। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद महात्मा गांधी का यह वाक्य इस बात का संकेत था कि देश की भाषा अब केवल हिंदी होगी। अंग्रेजी का स्थान केवल एक विदेशी भाषा के रुप में रहेगा। किंतु बड़े दुख के साथ लिखना पड़ रहा है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के 75 वर्षो के बाद भी इस देश में अंग्रेजी का वर्चस्व है।

14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा ने संविधान के सत्रहवें भाग के 343 अनुच्छेद में हिंदी को राजभाषा रुप में स्वीकार किया गया। यह भ्रांत धारणा है कि यह स्वीकृति केवल एकमत की अधिकता से हुई थी। वस्तुत: एकमत की अधिकता से नागरी अंकों को मान्यता 26 अगस्त 1949 को कांग्रेस संसदीय दल की बैठक में हुई थी। हिंदी को राज ॾसंपर्क ॠ भाषा के संबंध में संविधान सभा एकमत थी। हां, उसके स्वरुप के संबंध में अवश्य मतभेद थे।

संभवत: उस समय दृष्टिकोण यह था कि 1949 में प्रथम अथवा दूसरी श्रेणी में पढ़ने वाला छात्र 1965 तक एम. ए. कर चुकेगा और उसे इस प्रकार से शिक्षित किया जाएगा कि वह भारतीय भाषाओं में अपना संपूर्ण व्यवहार पूर्ण कर ले। पर धारा 343 (2) तथा 344 में ऐसी व्यवस्थाएं कर दी गई कि 1965 के बाद भी अंग्रेजी बनी रहे और यही हुआ। आज 2023 में अंग्रेजी यथावत् विद्यमान है, जो हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को अपना स्थान नहीं लेने दे रही ।

अंग्रेजी के पक्ष में सबसे प्रबल तर्क यह दिया जाता है कि संपूर्ण आधुनिक ज्ञान–विज्ञान आंग्लभाषा में ही उपलब्ध है, अत: उसके बिना शिक्षा का स्तर ऊंचा होना असंभव है। इसके अतिरिक्त पारिभाषित शब्दों का भारतीय भाषाओं में नितांत अभाव है। जिसके फलस्वरुप अंग्रेजी शब्दों के बिना व्यवहार में भी कठिनाई उपस्थित होगी। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अंग्रेजी का अत्यधिक महत्व है अतएव उसकी उपेक्षा करना मूर्खता है। आंग्लभाषा का महत्व प्रतिपादित करने के लिए कुछ अन्य तर्क भी दिए जाते हैं किंतु वे सभी उपयुक्त कारणों में

ही अंतर्भूत किए जा सकते हैं, अतः उनका पृथक उल्लेख करना व्यर्थ है।

ये सभी तर्क अत्यंत लचर हैं, वास्तविकता यह है कि हमारे देश की महती शक्ति मात्र अंग्रेजी में नष्ट हो रही है। भारत का छात्र जितनी शक्ति (समय, बुद्धि और धन) अंग्रेजी में लगाता है यदि उतनी ही शक्ति वह किसी दूसरे, अपनी रुचि के विषय में लगा पाए तो यह निश्चित है कि वह अपने विषय के साथ अधिक न्याय कर सकेगा और उसमें मौलिक चिंतन की क्षमता भी जागृत हो सकेगी। उसके अपने प्रिय विषय (राजनीति, अर्थशास्त्र, विज्ञान आदि) के मध्य अंग्रेजी की दीवार खड़ी होती है, उसके संपूर्ण श्रम इस दीवार के लांघने में लग जाता है। परिणामतः विषय को वह जानता मात्र है, उसकी गूढ़ता में जाने के लिए अनिवार्य चिंतन, मनन द्वारा सीढ़ियों पर चढ़ने का न तो उसके पास अवकाश ही होता है और न उस प्रकार की क्षमता।

यह स्पष्ट कर देना भी अनिवार्य है कि शिक्षा का उद्देश्य मस्तिष्क में ज्ञान–विज्ञान का संग्रह नहीं होता, वरन् चिंतन तथा परिस्थिति के अनुसार काम करने की क्षमता प्राप्त करना होता है। मात्र अंग्रेजी के ज्ञान–विज्ञान के अध्ययन से यह क्षमता तो उत्पन्न नहीं होती वरन् भारत का व्यक्ति अपने देश की परिस्थि. तियों से हटकर कुछ दूर की सोचने लगता है। यहां की परिस्थिति और विदेश की परिस्थिति में महान भेद है। अतः दोनों देशों के अर्थशास्त्र, राजनीति, समाजशास्त्र आदि विषयों के सिद्धांतों में भी भेद होना अनिवार्य है। इस अनिवार्य भेद का परिज्ञान ही हमारे देश की उन्नति में साधक सिद्ध होगा।

इसी प्रकार प्रत्येक देश की भूमि व वनस्पतियों में भेद के कारण कृषि–विज्ञान एवं वनस्पति शास्त्र से संबंधित अनुसंध ाानों से निकले निष्कर्ष भी प्रत्येक देश के पृथक–पृथक होते हैं। जलवायु की भिन्नता के कारण प्रत्येक देश का चिकित्सा–विज्ञान भी पृथक–पृथक विकसित होना चाहिए। हमारा निश्चित मत है कि अपने देश की सर्वांगीण उन्नति के लिए अंग्रेजी में लिखा ज्ञान–. विज्ञान बहुत उपयोगी नहीं है। जब तक हमारे देश का मस्तिष्क अपने ही देश की जलवायु, भूमि, परिस्थिति आदि का सूक्ष्म दृष्टि से निरीक्षण–परीक्षण नहीं करेगा तब तक न उसमें मौलिकता से विचार की क्षमता जागृत होगी और न उसके ज्ञान का अपने देश के लिए कोई उपयोग ही सिद्ध हो सकेगा।

प्रश्न है कि अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध ज्ञान–विज्ञान को भारतीय छात्र किस प्रकार सीखें ? पर यह प्रश्न अपने आप में अपूर्ण, प्रश्न तो यह है कि विश्व की विविध भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान को भारतीय विद्यार्थी किस प्रकार हृदयंगम करें? रुसी, जर्मन, फ्रेंच आदि भाषाओं के विविध विषयों की जानकारी भारत का व्यक्ति संबंधित भाषाओं के अंग्रेजी अनुवादों से करता है। पर ये अनुवाद मूलभाव से थोड़ी मात्रा में ही सही–निश्चय ही अलग हटे हुए होते हैं। अतः समस्या केवल अंग्रेजी में उपलब्ध ज्ञान–विज्ञान को भारतीय भाषाओं में लाने की नहीं है। समस्या का समाधान यह हो सकता है कि प्रत्येक विषय के कुछ विशिष्ट विज्ञान पृथक–पृथक भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर विषय की सामग्री का अनुशीलन करें और उसे भारतीय भाषाओं में सर्वथा मौलिक रुप से प्रस्तुत करें और यदि वे आवश्यकता का अनुभव करें, तो किसी कृति विशेष का अविकल अनुवाद भी प्रस्तुत कर दें। जिस भाषा में वह विशिष्टता प्राप्त करने का इच्छुक हो उसे उस देश में कम से कम दो वर्षों के लिए भेजने की व्यवस्था की जाए।

यह निश्चित है कि स्वतंत्र भारत में शासन के साथ सामान्य जनता का संपर्क इसलिए नहीं जुड़ पा रहा है कि देश की भाषा हिंदी का त्याग करके राजकाज में विदेशी भाषा अंग्रेजी का अधिक प्रयोग हो रहा है। जब देश में अंग्रेजी जानने वालों की संख्या दो प्रतिशत से अधिक नहीं है, अंग्रेजी का वर्चस्व बने रहने के कारण भारत सरकार का प्रजातंत्र, समाजवादी समाज व्यवस्था तथा कल्याणकारी शासन होने का दावा निरा खोखला सिद्ध हो सकता है। यूरोप में छोटे–छोटे देशों ने अपनी भाषा का वर्चस्व अपने यहां स्थापित किया है। इंग्लैंड अथवा अंग्रेजी के अत्यंत निकट रहने के बाद भी उन देशों की प्रजा अंग्रेजी से सर्वथा अनभिज्ञ है। फिर भी वे कला, साहित्य व विज्ञान में बहुत आगे हैं। पता नहीं क्यों भारत सरकार यूरोप से इस विषय में प्रेरणा प्राप्त नहीं करती। वस्तुतः बहुभाषा–भाषी भारतवर्ष के लिए समभाषिकता अत्यंत आवश्यक है और वह हिंदी ही हो सकती है।

इस प्रसंग में एक अन्य कटु सत्य की ओर ध्यान देना भी आवश्यक है। दूरदर्शन पर अंग्रेजी ही छाई रहती है। अंग्रेजी कार्यक्रमों का केवल अंग्रेजी पढ़े–लिखे लोग ही लाभ उठा सकते हैं। अभी तक दूरदर्शन के अंग्रेजी कार्यक्रमों में हिंदी निर्देश (संकेत) भी आरंभ नहीं किए गए। यदि भारत सरकार अंग्रेजी कार्यक्रम कम नही कर सकती तो अंग्रेजी के साथ हिंदी निर्देश (संकेत) लिखित रुप में देने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए।

अनुच्छेद 351 के अनुसार संविधान में स्वीकृत संघीय राजभाषा हिंदी उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश जैसे हिंदी प्रदेशों में बोली जाने क्षेत्रीय हिंदी नहीं है, वरन् वह संविधान की अष्टम् सूची में परिगणित सभी भारतीय भाषाओं की समन्वयात्मक हिंदी है, जो भारत की समन्वित संस्कृति की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सकती है अर्थात् संविधानानुमोदित हिंदी का अखिल भारतीय स्वरुप है, न कि क्षेत्रीय। देश की सभी भाषाओं को निकट लाने के लिए संविधान (धारा 351) के अनुसार हिंदी का स्वरुप ऐसा बनाना चाहिए जो इस देश के प्रत्येक भाषा–भाषी के लिए समान रुप से स्वीकार्य हो।

भारत की भाषा समस्या के समाधान के लिए त्रिभाषा सूत्र बनाया गया पर कर्नाटक, महाराष्ट्र तथा तमिलनाडु आदि में हिंदी को द्वितीय भाषा के रुप में स्वीकारते हुए त्रिभाषा सूत्र को पूर्णरुप से कार्यान्वित नहीं किया गया है। कुछ प्रांतों में तो एक भाषा सूत्र ही अपनाया जा रहा है। जहां त्रिभाषा सूत्र कार्यान्वित किया गया है, वहां भी हिंदी की पढ़ाई असंतोषजनक है। हिंदी अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए संतोषप्रद व्यवस्था नहीं है और न ही अनुयोज्य पाठ्यक्रम बनाया गया है। अतः सरकार के पास भाषा संबंधी कोई निश्चित नीति नहीं है। जिन सरकारों ने त्रिभाषा सूत्र को अपनाया है वे ही अपने प्रांत के विद्यार्थियों के भविष्य के प्रति अशंकित हैं और अपनी नीति बदलने की सोच रहे है। अंग्रेजी की अनिश्चितकाल

के लिए सहराजभाषा स्वीकार करने का यह दुष्परिणाम निकला कि अंग्रेजी का अस्तित्व बना रहा और हिंदी के राजभाषा बनने की संभावना नहीं रही।

एक समान न्यायिक व्यवस्था को विकसित करने की दृष्टि से यह आवश्यक है कि उच्च एवं उच्चतम न्यायालयों में कानून की भाषा हिंदी हो। इस दिशा में भारतीय संविधान में विविध उपबंधों पर गंभीरता से विचार किया गया है। संविधान के अनुसार प्रत्येक प्रादेशिक न्यायालयों के न्याय निर्णय प्रादेशिक भाषा में होने पर राष्ट्र की एकता नष्ट होगी तथा उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों की उच्चतम में नियुक्ति असंभव होगी। न्यायदान की गुणवत्ता नष्ट होगी तथा उच्च न्यायालयों के अखिल भारतीय स्वरुप में बाधा पड़ सकती है। यही नहीं, एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में आ बसने वालों को न्यायालयों में याचिकाएं प्रस्तुत करने में तभी सुविधा होगी जबकि न्यायालयों में एक सामान्य भाषा का प्रचार हो। यह भाषा अभी तक अंग्रेजी है पर उसका प्रयोग केवल वकील व न्यायाधीश ही करते हैं, सामान्य जनता जिनके मुकदमे हैं, उसे नहीं समझते। अभी तक हिंदी भाषी प्रदेशों के न्यायालयों में हिंदी को पूर्णरुप से न्यायोचित स्थान नहीं मिला। विगत वर्षों हिंदी के न्यायालयों में हिंदी के प्रयोग की अनुमति प्रदान करने के लिए वकीलों को संघर्ष करना पड़ा था। वस्तुतः संविधान के 348वें अनुच्छेद में अंग्रेजी को अनावश्यक महत्व दिया गया है। 348 (क) के अनुसार उच्चतम न्यायालय और प्रत्येक उच्च न्यायालय में सभी कार्यवाहियां अंग्रेजी भाषा में होगी। इसी अनुच्छेद के (ख) तथा अन्य उपधाराओं में भी अंग्रेजी में भी अंग्रेजी की प्रमुखता बनी हुई है। प्रजातंत्र में अल्पसंख्यकों के कुछ विशिष्ट अधिकार आवश्यक हैं–इसी तर्क के आधार पर अल्पसंख्यकों की भाषा तथा संस्कृति को जिस प्रकार प्रश्रय दिया गया है उससे प्रादेशिक भाषाओं तथा राष्ट्रीय भाषा पर बहुत ही दुष्प्रभाव पड़ा है। वस्तुतः अल्पसंख्यक भाषा को राजभाषा पद पर प्रतिष्ठित करने से इस देश की भाषाओं को जितनी हानि हुई है उतनी और किसी बात से नहीं। एक अल्पसंख्यक भाषा को राज्य की राजभाषा की मान्यता देना संविधान सभा की सबसे बड़ी गलती रही है।

संविधान में हिंदी को राजभाषा तक नहीं कहा गया, उसके लिए 'संघ सरकार की राजभाषा' शब्द का प्रयोग किया गया है। बाद में 1965 में एक राजभाषा अधिनियम बनाकर उसका यह अधिकार भी सदा–सदा के लिए छीन लिया गया है। आज देश स्वतंत्र है पर उसकी वाणी परतंत्र है। पता नहीं कोई पुरुषोत्तमदास टंडन या सेठ गोविंद दास संसद में आकर हिंदी को ठीक स्थान दिलाने के लिए संघर्ष कर सकेगा। हम भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री मोरार जी देसाई का स्मरण अत्यंत आदरपूर्वक करना चाहते हैं, उन्होंने अपने कार्यकाल में प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए सभी भारतीय भाषाओं को मान्यता दिलवा दी थी। इसी मान्यता का यह सुखद परिणाम है कि अब कुछ युवक अपनी भाषाओं के माध्यम से भी प्रतियोगी परीक्षा उत्तीर्ण करने लगे हैं। इससे अहिंदी भाषियों का यह भय बहुत कुछ दूर हुआ है कि हिंदी के छा जाने से वे प्रतियोगी परीक्षाओं में पिछड़ जाएंगे। वस्तुतः अन्य भारतीय भाषाओं को भी समादृत करने का प्रश्न उतना ही सार्थक है जितना कि हिंदी को समृद्ध करने का।

इस प्रसंग में हम उत्तर प्रदेश के भू. पू. मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह की सराहना करना चाहते हैं कि उन्होंने सभी राजकार्य हिंदी में करने का निर्णय लिया था, हम कर्नाटक सरकार की भी पशंसा करना चाहते हैं कि उन्होंने कन्नड़ में ही सभी कार्य करने का निर्णय ले लिया था।

यह निश्चित है कि जब तक संविधान में पूरी निष्ठा के साथ भारतीय भाषाओं का आदर नहीं होगा, तब तक हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की प्रतिष्ठा असंभव है। यह कार्य प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को 'हिंदी दिवस' मनाकर पूरा हो जाने वाला नहीं है, इसके लिए वैसे ही आंदोलन चलाने होंगे, जैसे देश को स्वतंत्र करवाने के लिए चलाए गए थे। ■

युगद्रष्टा तुलसी

डॉ. विष्णुप्रसाद पाठक
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

आत्मज आत्माराम माता हुलसी के तुलसी ने,
रामरस; रसायन को पीया आठों याम है।
रामनाम लेते हुए लिया जन्म तुलसी ने,
'रामबोला' नाम वाला सन्त यह महान है।
पूज्यपाद नरहरि सनातन जी से काशी में,
शास्त्रों में शिक्षित हो बढ़ाई कीर्तिमान है।
वेदों उपनिषदों के उनके मनन चिंतन में,
दिव्यभास भासित अलौकिक तत्त्वज्ञान है।
राम चरणों में लवलीन होकर तुलसी ने,
राघव आराधना की ज्योति को जलाई है।
मानस महाकाव्य के प्रणेता ज्ञानी तुलसी ने,
रामनाम गुण महिमा कोटि; कोटि गाई है।
महाकवि शिरोमणि रामदास बाबा तुलसी ने,
निगमागम वर्णित रामकथा को सुनाई है।
रामभक्ति शाखा के अनेक सन्त कवियों में,
तुलसी की दास्य भक्ति भावना अपूर्व है।
राम भक्त तपः पूत तुलसी की सर्जना में,
भक्ति ज्ञान कर्म की त्रिवेणी प्रवाहमान है।
लोक वेद रीति नीति साम्य अनुशासन में,
'मानस' में समाधान सूत्र विद्यमान है।
युगद्रष्टा तुलसी के 'राम चरित मानस' में,
धार्मिक वैषम्य का समन्वय भासमान है

हर्षोल्लास से मनाये गणेशोत्सव

आस्था–विश्वास का दस दिवसीय पर्व

सुश्री इंदु सिंह 'इंदु श्री'
उपसम्पादक (अध्यात्म संदेश)
स्वतंत्र लेखिका व विचारक
नरसिंहपुर (मध्य प्रदेश)

आज नन्हा आरुष सुबह से ही बड़ा खुश था उसके फ्रेंड बाल गणेशा का हेप्पी बर्थ डे जो था तो जल्दी से उठकर बिना किसी के कहे ही वो नहा–धोकर तैयार हो चुका था। आज वह थोड़ी देर बाद पापा के साथ बाजार जाकर गणपति की एक मूर्ति लायेगा और दस दिन तक उनकी पूजा करेगा। अब वह अगले दस दिनों तक हर दिन अलग–अलग मिठाई खायेगा जो भी उसके दोस्त गन्नू को पसंद है। उसका जोश देखकर उसके मम्मी–पापा भी उसकी इस खुशी में खुश दिखाई दे रहे थे। उसने तो रात को उनको स्थापित करने के लिये पूजा घर के एक कोने में अपनी स्टडी टेबल लगाकर रंगीन पेपर्स, लट्टू एवं लाइट्स से बड़ी सुंदर सजावट कर रखी थी। उसने सोच लिया था जब वो उनकी मूर्ति लेकर आयेगा तो उन्हें इस जगह पर बिठायेगा उसके इस काम में मम्मा ने भी उसकी मदद की थी जिससे कि उसका उत्साह दुगुना–चौगुना बढ़ गया था। जब वो मार्किट गया तो उसे वहां तरह–तरह की सजी–संवरी मूर्तियाँ दिखाई दी जिन्हें देखकर उसकी आँखों में वो चमक नहीं दिखाई दी जो उसके पापा देखना चाहते थे। उन्होंने उसे हर दुकान ले जाकर दिखाई पर, उसे किस तरह कि चाहिये थी ये उन्हें समझ नहीं आ रहा था तभी उसकी नजर एक ठेले वाले पर पड़ी जिसके पास एकदम साधारण बिना रंगी मिट्टी की मूर्तियाँ थी जिसे देखकर वो उछल पड़ा कि यही तो वो ढूंढ रहा था और उसने झट एक मूर्ति ले ली।

ये देखकर उसके पापा बहुत खुश हुये कि उनके बेटे को उत्सव मनाने के साथ–साथ पर्यावरण की भी उतनी ही परवाह है। इस बात ने उन्हें निश्चिंतता से भर दिया कि आज की पीढ़ी केवल मौज–मस्ती करना ही नहीं जानती बल्कि, अपनी संस्कृति और परंपरा का निर्वहन करने में भी पारंगत है। इसके अलावा वो अपने आस–पास के वातावरण के प्रति भी उतनी ही सजग है। यदि उसे सही परवरिश और सही मार्गदर्शन दिया जाये तो पुरातन व नवीन रवायतों का एक संतुलित उदाहरण पेश कर सकती है। इस जन. रेशन की सबसे बढिया बात यह हैं कि इसे अधिक समझाना नहीं पड़ता अत्याधुनिक तकनीक कहे या कंप्यूटर युग का कमाल कि वो इशारों को भी समझ लेती है। ऐसे में अगर उनको इन माध्यमों से ही सही शिक्षा या संदेश दिया जाये तो गजब की पौध तैयार हो सकती है जिसकी दिमागी काबिलियत का मुकाबला कोई भी नहीं कर पायेगा। लेकिन, जिसे देखो वही अपने बच्चों को मोबाइल या लैपटॉप तो दे रहा लेकिन उसका उपयोग किस तरह करना या उस पर क्या देखना ये नहीं बता रहा है। इसलिए अपनी ना–समझी से वो दिग्भ्रमित हो रही और ऐसे में जो उसकी बुद्धि से उसे समझ आ जाता वो उसे ही सही समझने लगती है। जबकि इन गेजेट्स को देते समय यदि माता–पिता थोड़ा–सा समय भी उन्हें दे दे तो सोने पर सुहागा हो जाये और बच्चे ब्लू–व्हेल जैसे खतरनाक गेम्स के चक्कर में अपनी अनमोल जिंदगी न गंवाये।

उसे आज बेहद ही खुशी हो रही थी कि उन दोनों ने मिलकर अपने बेटे आरुष को बचपन से अपने देश के गौरवशाली इतिहास से परिचित करवाया है। ताकि गलत जानकारियों से उसकी भी गलत मानसिकता निर्मित न हो जाये। इसके साथ ही उन दोनों ने उसे अपने देश की विविध विशेषताओं व थोड़ी सतरंगी तो थोड़ी अतरंगी परम्पराओं का भी ज्ञान दिया है। जिसकी वजह से आज उसके जेहन में किसी तरह का कोई पूर्वाग्रह या कोई भ्रम नहीं है। वो यदि दोस्तों के साथ फ्रेंडशिप डे मनाता है तो अपने पर्वों पर भी उतनी ही धूम मचाता है। इस सोच ने उसको सुकून दिया और उसने घर जाकर धूमधाम से गणेश प्रतिमा की स्थापना कर सबको बधाइयाँ भी दी। आज गणेश चतुर्थी पर इससे बढ़कर दूसरी शुरुआत भला और क्या हो सकती थी अतः समस्त परिवार आज प्रसन्न था।

धरा का श्रृंगार

भावना दामले
स्वतंत्र लेखन
इंदौर (मध्य प्रदेश)

आओ सब मिलकर धरा का शृंगार करें हम
आओ सब मिलकर धरा का रूप संवारे हम

वृक्षारोपण का पावन संदेश जन–जन तक पहुँचाना होगा
हरियाली और खुशहाली का मंत्र सबको समझाना होगा

जीवनदायिनी वायु का प्रतिशत बढ़ाना ही होगा
छोटे बड़े वृक्ष लगाकर धरती माता को सँवारना होगा

पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाना होगा
इसके लिए हम सबको ही प्रयास करना होगा

भावी पीढियाँ बचाने हेतु वृक्ष लगाने ही होंगे
मानवता की रक्षा के लिए वृक्ष लगाने ही होंगे

एक नयी परिपाटी सबको शुरू करनी होगी
प्रत्येक मंगल प्रसंग पर एक वृक्ष लगाना होगा

पर्यावरण संरक्षण करने का संकल्प लेंगे हम
तब ही मानव जाति की सुरक्षा कर पायेंगे हम।

॥ श्रीमद्भर्तृहरिविरचितं नीतिशतकम् ॥

॥ मिथ्या मायाजाल में पड़कर जीवन और धर्म नष्ट हो जाते हैं॥

यां चिन्तयामि सततं, मयि सा विरक्ता, साप्यन्यमिच्छति जनं स जनोऽन्यसक्तः। अस्मत्कृते च परितुष्यति, काचिदन्या धिक्तां च तं च मदनं च इमां च मां च॥

'जिस स्त्री का मैं रात–दिन स्मरण करता हूँ, वह मेरी पत्नी मुझसे विरक्त रहती है एवं किसी दूसरे पुरुष को चाहती है। वह पुरुष भी मेरी पत्नी को नहीं चाहता है, किंतु किसी दूसरी स्त्री/वेश्या में प्रेमासक्त है। वह स्त्री/वेश्या उस पुरुष को नहीं चाहती है, वह मुझसे प्रेम करती है। अत: मेरी स्त्री को धिक्कार है ! उस पुरुष को धिक्कार है ! इन सब कामों की प्रेरणा करने वाले कामदेव को धिक्कार है ! इस वेश्या को धिक्कार है तथा साथ ही मुझको भी धिक्कार है, जो इस प्रकार मिथ्या मायाजाल में पड़कर जीवन तथा धर्म को नष्ट कर रहे हैं।

– संकलनकर्ता : आशागंगा प्रमोद शिरढोणकर,
उज्जैन

देवताओं और ऋषि मुनियों के क्रोध की सार्थकता

डॉ. शारदा मेहता
स्वतंत्र लेखन
ऋषिनगर विस्तार,
उज्जैन (म.प्र.)

क्रोध एक मनोविकार है। सभी प्राणियों में किसी न किसी रूप में यह विद्यमान रहता है। क्रोध का प्रारंभ चिड़चिड़ाहट से होता है। चिड़चिड़ाहट को वश में कर लिया जाए तो क्रोध पर नियंत्रण रखा जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति समय पर कार्य न करें, कुशलता से कार्य न करे, हर कार्य में लापरवाही करे और अपने कार्य के प्रति जिम्मेदार न रहे तो उसे उचित समझाइश देकर क्रोध से बचा जा सकता है। क्रोध स्वास्थ्य का शत्रु है। यह क्रोध करने वाले व्यक्ति के लिए घातक है। इससे उच्च रक्तचाप, हृदयाघात तथा ब्रेन स्ट्रोक होने की संभावना रहती है। इसलिए मानव को निरर्थक क्रोध करने से बचना चाहिए। गोस्वामी तुलसीदासजी ने कहा है–

काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजहुँ भजहि जेहि सन्त।।

(श्रीराम च.मा. सुन्दरकाण्ड दोहा क्र. ३८)

अर्थात – काम, क्रोध, मद, लोभ ये सभी नर्क की ओर ले जाने वाले रास्ते हैं। इसलिए सन्त व्यक्ति इन सबको छोड़कर भगवान श्रीराम के नाम को भजता है।

क्रोध सुखी मानव जीवन के लिए घातक है। घर का क्रोध कार्यालय में और कार्यालय के क्रोध का प्रभाव घर में लाने में समझदारी नहीं है। जब क्रोध में आवेशित हों तो एक गिलास ठंडा पानी पी लें, आत्मसंयम रखें, कुछ देर के लिए मौन हो जाएं, आसपास के वातावरण को समझने का प्रयत्न करें। क्रोध में अनर्गल प्रलाप सम्बन्धों में कटुता पैदा करता है। क्रोध की पराकाष्ठा जीवन को नारकीय बना देती है। आसपास के वातावरण में नकारात्मकता फैल जाती है। क्रोध से प्रभावित सदस्यों का मनोबल कमजोर कर शान्ति भंग करता है, उनके स्वास्थ्य पर भी विपरीत प्रभाव डालता है। भगवत् गीता में भी क्रोध के बारे में कहा है–

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात् स्मृति विभ्रम:।
स्मृति भ्रशाद् बुद्धिनाशोबुद्धिनाशात् प्रणश्यति।।

(भगवद गीता अध्याय २/६३)

अर्थात– क्रोध से पूर्ण मोह उत्पन्न होता है और मोह से स्मरण शक्ति भ्रमित होती है, बुद्धि भी नष्ट हो जाती है और बुद्धि नष्ट होने पर मनुष्य भवकूप में गिर जाता है।

मानव तो मानव कई बार भगवान भी सर्वजन हिताय क्रोधित हो जाते हैं। भगवान का क्रोध सार्थक रहता है। यहाँ कतिपय भगवान एवं प्रसिद्ध ऋषि मुनियों के क्रोध का वर्णन किया जा रहा है–

श्रीकृष्ण भगवान– श्रीकृष्णजी ने शिशुपाल के सौ अपराध क्षमा कर दिए थे। जब उसने १०१वीं बार अपराध किया तो श्रीकृष्णजी ने सुदर्शन चक्र से उसका वध कर दिया। महाभारत के युद्ध में भीष्म पितामह पर क्रोध करके उन पर प्रहार करने के लिए रथ का पहिया उठा लिया

था। श्री कृष्णजी ने कहा था कि युद्ध में वे हथियार नहीं उठाएंगे परन्तु अपनी प्रतिज्ञा भंग कर उन्होंने आवश्यकता को देखते हुए रथ का पहिया उठा लिया।

शंकरजी – भगवान शंकर ने उनकी तपस्या भंग करने आए कामदेव का वध अपना तीसरा नेत्र खोल कर उसे भस्म कर दिया।

सौरभ पल्लव मदनु बिलोका। भयउ कोपु कंपेउ त्रैलोका।।
तब सिवँ तीसर नयन उघारा। चितवत कामु भयउ जरि छारा।।

(श्रीरामचरितमानस बालकाण्ड ८६/३)

अर्थात– जब आम के पत्तों में छिपे हुए कामदेव को देखा तो उन्हें बड़ा क्रोध हुआ, जिससे तीनों लोक काँप उठे। तब शिवजी ने तीसरा नेत्र खोला, उनके देखते ही कामदेव जलकर भस्म हो गया।

सती के पिता दक्ष प्रजापति के यहाँ उनका अपमान होने पर उनके गणों ने यज्ञ का विध्वंस कर दिया था। सती ने भी योगाग्नि में अपने आपको भस्म कर दिया था।

श्रीराम– भगवान श्रीराम को लंका जाने के लिए समुद्र पार करना था। समुद्र पर उन्हें पुल बाँधना आवश्यक था। श्रीराम अपनी सेना सहित समुद्र किनारे उससे विनती कर रहे थे। समुद्र अडिग था। वह रामजी के कथन को गंभीरता से समझ नहीं रहा था। तब रामजी को क्रोध आ गया। वे बोले–

विनय न मानत जलधि जड़ गए, तीन दिन बीति।
बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति।।

(श्रीराम च.मा. सुन्दरकाण्ड दोहा ५७)

इन्द्र पुत्र जयन्त कौआ का रूप धारण कर सीताजी के पास आया और चौंच से उनके अंग को काटा। तब बहते रक्त को देखकर श्रीराम को उस पर क्रोध आ गया। तब उन्होंने तृण का उपयोग ब्रह्मास्त्र के रूप में किया। कौआ तीनों लोकों में भागता रहा। तब रास्ते में नारदजी उसे मिले। उन्होंने कौआ को समझाया कि वह श्रीराम की शरण में जाकर क्षमा याचना करें। ब्रह्मास्त्र कभी निष्फल नहीं हो सकता है। इस कारण कौआ की दाई आँख दृष्टि हीन हो गई। आज भी यह दोष कौआ की आँख में पाया जाता है।

बालि का वध करने के उपरान्त श्रीराम ने किष्किन्धा का राज्य सुग्रीव को सौंप दिया। सुग्रीव ने श्रीराम को वचन दिया था कि सीतान्वेषण में वह आपकी सहायता करेगा। परन्तु राजमद तथा भोग विलास में लिप्त सुग्रीव अपने वचन को भूल गया, तब क्रोधित होकर श्रीराम ने भ्राता लक्ष्मण को सुग्रीव को उसका वचन स्मरण दिलाने के लिए भेजा। लक्ष्मण भी वहाँ के विलासितापूर्ण वातावरण को देखकर क्रोधित हो जाते हैं। सुग्रीव को उसका वचन स्मरण हो जाता है और वह हनुमानजी की नियुक्ति श्रीराम के कार्य को क्रियान्वित करने के लिए करते हैं।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम धीर, वीर, गंभीर, शान्त चित्त और सहिष्णु थे। विष्णु के अवतार होने के साथ ही मानव शरीरधारी थे। अतः मानव स्वभाव की सामान्य कमियों का प्रभाव उनमें भी दृष्टिगोचर होता है। इन सभी भगवान के क्रोध से किसी न किसी समस्या का निराकरण सकारात्मक हो यही इसका उद्देश्य था। उनका क्रोध स्वार्थ से प्रेरित नहीं था।

देवर्षि नारद : भारतीय सनातन परम्परा में ऋषि मुनियों के क्रोध की पराकाष्ठा के अनेक उदाहरण प्राप्त होते हैं। नारद मुनि विवाह करना चाहते थे। परम सुन्दरी विश्वमोहिनीजी के स्वयंवर का समाचार जब उन्हें ज्ञात हुआ तो वे भी इसमें सम्मिलित होने की कामना करने लगे। वे भगवान विष्णु के पास गए और उनसे राजकुमारी के स्वयंवर में जाने के लिए सुन्दर रूप प्रदान करने का आशीर्वाद माँगा। वे स्वयंवर में पहुँचे। मन में वे अपने आपको बहुत सुन्दर समझ रहे थे। किन्तु स्वयंवर में पहुँचने पर उनका रूप वानर जैसा हो गया था। जब राजकुमारी ने वानर रूप में उन्हें देखा तो वह भी अत्यधिक क्रोधित हो गई। भगवान विष्णु राजा के रूप में वहाँ आए और राजकुमारी विश्वमोहिनी ने वर के रूप में उनका चयन कर लिया। जब नारद वहाँ से गए तो उन्होंने एक तालाब के जल में अपना वानर रूप देखा। वे अत्यधिक क्रोधित हुए और उन्होंने भगवान विष्णु को शाप दिया कि आपको पत्नी का वियोग सहन करना पड़ेगा और मुझे आपने वानर रूप दिया, अतः वानर की सेना ही आपकी सहायता करेगी। नारदजी के दिया हुए शाप के अनुसार रामावतार में श्रीराम को सीताजी का वियोग हुआ और वानर सेना के माध्यम से ही रावण पर उनकी जीत हुई और हनुमानजी ने ही उनकी सहायता की। श्रीरामचरितमानस में नारदजी अपने दिए शाप पर पश्चाताप करते हैं। वे कहते हैं –

बिरहवन्त भगवन्तहि देखी। नारद मन भा सोच बिसेषी।।
मोर साप करि अंगीकारा। सहत राम नाना दुरूख भारा।।

(श्रीरामचरितमानस अरण्यकाण्ड ४०/३)

ऋषि दुर्वासा : दुर्वासा ऋषि भी अपने क्रोध के लिए प्रसिद्ध हैं। वे अत्रि अनुसूया के पुत्र थे। उनके क्रोध में शंकरजी का अंश है। कहीं कहीं वे शंकरजी से बढ़कर क्रोध करते हैं। प्रायरू सभी राजा–महाराजा, ऋषि–मुनि उनके भयंकर क्रोध और दिए जाने वाले शाप से डरते हैं। अभिज्ञान शाकुन्तलम् में राजा दुष्यन्त की स्मृति में बैठी हुई शकुन्तला को दुर्वासा के आगमन का ध्यान नहीं रहता है तो वे उसे शाप दे देते हैं कि तू जिसकी स्मृति में बैठी है वह राजा तुझे शीघ्र ही विस्मृत कर देगा। यह शाप शकुन्तला को विचलित कर देता है। वह दुर्वासा से क्षमा याचना करती है। राजा द्वारा शकुन्तला को दी गई अँगूठी नदी में गिर जाती है। जब वह दुष्यन्त राजा से मिलने जाती है तो वह अँगूठी राजा को बता नहीं सकती है। राजा उसे पहचानता नहीं है। दुर्वासा के शाप का बड़ा प्रभाव है।

दुर्वासा के श्राप से इन्द्र भी श्रीविहीन हो गए थे। एक बार दुर्वासा ने पारिजात पुष्प की एक भव्य सुन्दर माला इन्द्र को भेंट की। इन्द्र ने वह माला ऐरावत हाथी की सूँड पर रख दी। हाथी ने उसे नीचे गिरा दिया। दुर्वासा ने इसे अपना घोर अपमान समझा और क्रोध वश इन्द्र को शाप दिया कि तुम आज से श्रीविहीन हो जाओगे।

एक बार भगवान श्रीराम अपने दरबार में गुप्त मंत्रणा कर रहे थे। दरबार सुनसान था। केवल श्रीराम और यमराज ही मंत्रणा कर रहे थे। श्रीराम ने अपने विश्वासपात्र भाई लक्ष्मण को दरबार

कक्ष के बाहर पहरेदारी करने का कार्य सौंपा था। यमराज का कथन था कि हमारी वार्ता के मध्य कोई भी यहाँ प्रवेश नहीं करेगा। यदि असावधानीवश कोई भी यहाँ प्रवेश करता है तो उसे मृत्युदण्ड मिलेगा। लक्ष्मणजी द्वार पर खड़े थे। अचानक दुर्वासा का आगमन होता है। वे किसी आवश्यक कार्य से श्रीराम से भेंट करना चाहते हैं। लक्ष्मणजी बड़े आदर से उन्हें समझाते हैं कि अभी श्रीराम मंत्रणा में व्यस्त हैं। अभी वहाँ नहीं जा सकते। यह सुनकर दुर्वासा अत्यधिक क्रोधित हो जाते हैं। वे कहते हैं कि मैं अगर अन्दर न जा सका तो सम्पूर्ण अयोध्या को शापित कर दूँगा। यह सुनकर लक्ष्मण के सामने धर्म संकट उपस्थित हो गया। वे सोचते हैं कि सम्पूर्ण अयोध्या को इनके क्रोध से बचाना आवश्यक है चाहे मुझे बलिदान ही क्यों न देना पड़े। वे श्रीराम के पास दुर्वासा के आगमन की सूचना देने दरबार में चले जाते हैं। श्रीराम अपनी वार्ता समाप्त कर दुर्वासा की सेवा सत्कार करते हैं और यमराज को दिए वचन के अनुसार लक्ष्मण को मृत्यु दण्ड देते हैं।

पांडवों के वनवास के समय की कथा रोचक और महत्वपूर्ण है। एक बार दुर्योधन ने दुर्वासाजी को युधिष्ठिर की कुटिया में भेजा। दुर्योधन चाहता था कि वहाँ क्रोधित होकर दुर्वासा पांडवों को शाप दे दे। वन में रहने वाले पांडवों के पास दुर्वासा पहुँचे। उन सभी का भोजन हो चुका था। कुन्ती भी भोजन कर चुकी थी। अचानक दुर्वासा के आ जाने से कुन्ती को चिन्ता हुई। कुन्ती के पास अक्षय पात्र था। उसकी यह विशेषता थी कि कुन्ती के भोजन करने के पूर्व यदि अनेक अतिथिगण भी आ जाए तो वह पात्र भोजन उपलब्ध करा देता था किन्तु यदि कुन्ती ने भोजन कर लिया तो भोजन बनना असंभव था। जब दुर्वासा वहाँ पधारे तब कुन्ती भोजन कर चुकी थी। उसने भगवान श्रीकृष्ण का स्मरण किया। कृष्णजी ने आकर सहायता की। पात्र में चावल के कुछ कण शेष थे। भगवत् कृपा से दुर्वासा स्नान करने अपने दस हजार शिष्यों के साथ गए। जब वे वापस आए तो भोजन तैयार था। वे अति प्रसन्न हुए। यदि भगवान कृष्ण ने आकर समय पर सहायता न की होती तो पाण्डवों को दुर्वासा के क्रोध का भाजन बनना पड़ता।

ऋषि परशुराम : जमदग्नि पुत्र परशुराम का क्रोध सनातन धर्म में अति प्रसिद्ध है। उन्हें विष्णुजी के छठे अवतार के रूप में माना जाता है। कार्तवीर्य पुत्र सहस्त्रार्जुन ने कामधेनु गाय प्राप्त करने के लिए जमदग्नि की हत्या कर दी। परशुराम उस समय तपस्या के लिए गए हुए थे। उन्होंने अब पति शोक में विलाप करती हुई माँ की पुकार सुनी तो वे दौड़े-दौड़े आश्रम में आ गए। उन्होंने शपथ ली कि वे पृथ्वी को इक्कीस बार क्षत्रिय विहीन कर देंगे, क्योंकि पति वियोग में इक्कीस बार अपनी छाती (वक्षस्थल) को ठोका था। परशुरामजी ने सहस्त्रार्जुन का वध कर दिया।

श्रीराम ने जनकपुरी में सीता स्वयंवर में शिव धनुष का भंजन कर दिया। यह सूचना जब शिवभक्त परशुरामजी को प्राप्त हुई तो जनकपुरी में वे क्रोधाग्नि से भरे हुए आए–

अरुन नयन भृकुटी कुटिल चितवत नृपन्ह सकोप।
मनहु मत्त गज गन निरखि सिंघ किसोरहि चोष।।

(श्री रा.च.मा. बालकाण्ड दोहा क्र. २६७)

अर्थात– जब परशुराम पधारे तो उनके लाल लाल नेत्र, भौंहें टेढ़ी थीं। वे क्रोध से राजाओं को देखने लगे। वे ऐसे लग रहे थे मानों मतवाले हाथियों का झुंड देखकर सिंह के बच्चे को जोश आ गया हो। परशुरामजी जनकजी से कहते हैं–

अतिरिस बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा।
बेगि देखाउ मूढ़ नत आजू। उलटऊँ महि जहँ लहि तव राजू।।

(श्री रा.च.मा. बालकाण्ड २६९/२)

क्रोधित होकर वे श्रीराम और लक्ष्मण से चर्चा करते हैं। श्रीराम शान्त रहते हैं वहीं लक्ष्मणजी मुस्कराते हुए उनसे मजाक करते हैं। वे लक्ष्मण से कहते हैं–

रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार।
धनु ही सम तिपुरारि धनु बिदित सकल संसार।। (२७१)

(श्री रा.च.मा. बालकाण्ड दोहा २७१)

अर्थात् अरे राजपुत्र काल के वश होने से तुझे बोलने में कुछ होश नहीं है। सारे संसार में विख्यात शिवजी का यह धनुष क्या धनु ही के समान है?

लक्ष्मण परशुराम संवाद बड़ी देर तक चलता है। परशुराम जी अपना परशु हाथ में लेकर लक्ष्मण की ओर बढ़ते हैं। ऋषि विश्वामित्र उन्हें बालक के अपराध को क्षमा करने के लिए कहते हैं। श्रीराम भी लक्ष्मण को इशारे से रोकते हैं। अंत में लक्ष्मणजी कहते हैं–

लखन कहेउ हँसि सुनहु मुनि क्रोधु पाप कर मूल।
जेहि बस जन अनुचित करहिं चरहिं बिस्य प्रतिकूल।। २७७

(श्रीराम च.मा. बालकाण्ड २७७)

अर्थात– लक्ष्मणजी ने हँस कर कहा– हे मुने सुनिये क्रोध पाप का मूल है, जिसके वश में होकर मनुष्य अनुचित कर्म कर बैठते हैं और विश्वभर के प्रतिकूल चलते (सब का अहित करते हैं)

भृगु ऋषि : भृगु ऋषि का क्रोध भी विचित्र है। बहुधा आश्रमों में ऋषि मुनियों में ज्ञान चर्चा होती रहती थी। चर्चा का विषय था कि तीनों देवों में (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) में श्रेष्ठ कौन है? उन्होंने महर्षि भृगु से कहाँ कि आप इन त्रिदेवों की परीक्षा लेकर आवें। उन्हें भासित हुआ कि विष्णु ही सर्वश्रेष्ठ हैं। सर्वप्रथम वे अपने पिता ब्रह्माजी के पास पहुँचे। वहाँ भृगुजी ने न तो उनकी स्तुति की, न ही उन्हें प्रणाम किया। ब्रह्माजी को क्रोध आ गया। पर स्वविवेक से उन्होंने क्रोध को नियंत्रित कर लिया। अब भृगु महादेवजी के पास गए। शंकरजी खड़े हो गए और भृगुजी को गले लगाने के लिए उन्होंने अपनी दोनों बाहें फैला दी। किन्तु भृगु ने उनका आलिंगन स्वीकार नहीं किया। इससे शंकरजी को क्रोध आ गया और उन्होंने अपना त्रिशूल उठा लिया। इसी समय माता सती बीच में आ गई जिससे शंकरजी का क्रोध शान्त हो गया। इसके पश्चात भृगुजी विष्णु लोक गए। भगवान विष्णु लक्ष्मीजी की गोद में सिर रखकर सो रहे थे। भृगु जैसे ही वहाँ पहुँचे, उन्होंने विष्णुजी के सीने पर पैर से प्रहार कर दिया। उसी समय विष्णुजी उठे और उन्होंने भृगुजी

से कहा कि आपके पैर में चोट तो नहीं लगी, लाइये मैं आपके पैर दबा देता हूँ। यदि मुझे आपके यहाँ आगमन की सूचना मिलती तो मैं आपका स्वागत करता। आपके चरणों के स्पर्श से मैं अति प्रसन्न हूँ और अपने आपको धन्य मानता हूँ। भृगुजी शंकर और ब्रह्माजी के पास वापस आए और विस्तार से उन्हें सारा घटनाक्रम बतला दिया।

विश्वामित्र : विश्वामित्र भी अपने क्रोध के लिए प्रसिद्ध थे। एक बार गुरु वशिष्ठ अपने शिष्यों के साथ विश्वामित्र के आश्रम में आए। विश्वामित्र उस समय ध्यान लगा कर बैठे थे। अतः वशिष्ठजी को वहाँ प्रतीक्षा करनी पड़ी। ध्यान पूर्ण होने पर विश्वामित्र ने स्वागत सत्कार के पश्चात उन्हें आश्रम में ही भोजन ग्रहण करने का आग्रह किया। वसिष्ठजी ने कहा कि हमारी संख्या अधिक है अतः भोजन व्यवस्था संभव न हो सकेगी। वसिष्ठजी को अपनी कामधेनु गाय पर पूर्ण विश्वास था, अतः उन्होंने कहा कि आप चिन्ता न करें सारी व्यवस्था कामधेनु संभाल लेगी। कुछ समय पश्चात् कामधेनु ने भोजन तथा ठहरने की पूर्ण व्यवस्था अपने सहयोगियों को बुलाकर दी और सभी को भोजन के लिए बुला लिया। सम्पूर्ण व्यवस्था देखकर वशिष्ठजी ने विश्वामित्र से कहा कि यह गाय मुझे दे दीजिए। वसिष्ठजी ने अपनी असमर्थता व्यक्त की तो वसिष्ठजी के सैनिकों ने कामधेनु को पकड़ कर उसे बलात् अपने साथ ले जाने लगे। कामधेनु ने दया भाव से विश्वामित्र की ओर देखा तो उन्होंने कहा कि ये सब मेरे अतिथिगण है अतरू मैं इनसे युद्ध नहीं कर सकता हूँ। कामधेनु ने विश्वामित्र से कहा कि यदि आप आज्ञा दें तो मैं अपने तपोबल से सेना बुलाकर इनसे युद्ध कर सकती हूँ। विश्वामित्र की आज्ञा प्राप्त कर कामधेनु ने अपनी सेना बुलाई और युद्ध प्रारंभ किया। वसिष्ठजी ने कहा कि आप युद्ध न करें। इस गाय के बदले मैं तुम्हें स्वर्ण, रजत, हाथी, घोड़े और सहस्त्रों गायें दे दूँगा। परन्तु विश्वामित्र को कामधेनु नहीं देनी थी। कामधेनु की हुँकार मात्र से विश्वामित्र के सौ पुत्र नष्ट हो गए। उन्होंने अपने एकमात्र पुत्र को राजा के पद पर अभिषिक्त कर विश्वामित्र तप करने वन में चले गए। महादेव ने उन्हें धनुर्वेद का वरदान दिया। विश्वामित्र अस्त्र पाकर प्रसन्न हो गए और उन्हें अभिमान हो गया। वे पुनरू वसिष्ठ के आश्रम में पहुँच गए और वहाँ वे अस्त्रों का उपयोग करने लगे। वशिष्ठजी ने अपने ब्रह्मदण्ड से उनके अस्त्रों को नष्ट कर दिया।

इक्ष्वाकु वंश में एक राजा था। वह ऐसा यज्ञ करवाना चाहता था जिससे सशरीर स्वर्गलोक में पहुँचा जा सके। वसिष्ठजी ने कहा कि यह कार्य असंभव है। वसिष्ठजी ने कहा कि यह कार्य आपके लिए असंभव है तो मैं दूसरे के पास जाऊँगा। राजा त्रिशंकु की यह बात सुनकर महर्षि के पुत्रों ने उसे यह शाप दिया कि तुम चांडाल हो जाओगे। शाप के वशीभूत वह चांडाल हो गया। तब वह विश्वामित्र के पास गया। वे समझ गये कि किसी ने शाप दिया है इसलिए यह चाण्डाल बना है। तुम भयभीत मत होओ। तुम सशरीर स्वर्गलोक को जाओगे। विश्वामित्रजी ने यज्ञ सामग्री बुलवाई। वसिष्ठजी के पुत्रों को भी यज्ञ में बुलाया गया। किन्तु क्रोधित होकर उन्होंने कहा कि जिस यज्ञ में चाण्डाल हो और आचार्य क्षत्रिय हो, उस यज्ञ में जाना असंभव है। विश्वामित्र ने अपनी तपस्या के फल से त्रिशंकु को सशरीर स्वर्गलोक भेज दिया। इन्द्र ने जब यह देखा तो उन्होंने उसे वापस जाने को कहा। त्रिशंकु ने विश्वामित्र को करुण आवाज में पुकारा। विश्वामित्र ने उसे वहीं ठहर जाने को कहा। वह आकाश में मध्य में ही लटककर रह गया। वह सशरीर स्वर्ग नहीं जा सकता क्योंकि उसके पुण्य नष्ट हो गए हैं। वे चाण्डाल हो गए हैं। विश्वामित्र ने कहा कि त्रिशंकु को सर्वदा स्वर्ग का सुख प्राप्त हो। उन्होंने जिस सृष्टि का निर्माण किया है वह सदा बनी रहे। नक्षत्रों के मध्य त्रिशंकु सर्वदा सिर नीचे किए हुए प्रकाशमान बने रहे।

गौतम ऋषि : अहल्या के पति गौतम ऋषि नदी पर स्नान करने गए। उनकी अनुपस्थिति में इन्द्र गौतम ऋषि का स्वरूप धारण कर अहल्या के पास चले गए। गौतम ऋषि जब नदी से स्नान कर वापस आए तो उन्होंने इन्द्र को वहाँ देखा तो क्रोधित होकर उन्होंने अहल्या को शाप दिया कि तू शिला हो जा और इसी स्थान पर पड़ी रह। रामावतार में जब भगवान राम वहाँ आए तो उन्होंने अहल्या का उद्धार किया।

हमने इस लेख में कुछ प्रमुख भगवान तथा ऋषि मुनियों द्वारा समय–समय पर किए गए क्रोध का वर्णन किया है। जब इतनी महान आत्माएँ क्रोध के विकार से अपने आपको बचा नहीं सकीं तो हम सामान्य मानव की क्या बिसात कि हम इस मनोविकार से अपने आप को सुरक्षित रख सकें। हाँ, इतना प्रयत्न मानव मात्र को अवश्य करना चाहिए कि जब भी क्रोध में आवेशित हों तो अपने आप पर नियंत्रण रखने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए। यह कठिन अवश्य है पर दुष्कर नहीं है। शनैः शनैः दैनिक जीवन में अपनी आदतों में परिवर्तन कर इसे नियंत्रित किया जा सकता है। यह मनोविकार स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालता है। स्वनियंत्रण कर के देखें कि जीवन कैसे सकारात्मक हो जाएगा। अनावश्यक विचार घेरे नहीं रहेंगे। अपनी कलाई में कड़ा पहनकर या कलावा बाँध लेने से बारम्बार उस पर ध्यान जाएगा कि हमें क्रोध नहीं करना है। कुछ समय निकाल कर प्रतिदिन योग करें, ध्यान करें, दस मिनिट भगवान्नाम का स्मरण करें। इससे व्यग्रता नष्ट होगी और एकाग्रता आएगी। एक दिन का क्रोध सात दिन के व्यवस्थित जीवन की शान्ति भंग कर देता है। सर्वप्रथम अनावश्यक चिड़चिड़ाहट को नियंत्रित करें। अपने सहयोगियों द्वारा किए गए हर कार्य में मीन मेख न निकालें। उचित समझाइश से भी कार्य सुधर सकता है। प्रत्येक छोटी–छोटी बातों के लिए दूसरों पर निर्भर न रहें। क्रोध आने पर इष्टदेव का स्मरण करें– जय हनुमान, जय श्रीराम, हरे कृष्ण, जय शिव आदि ईश नामों को उठते–बैठते बोलें। आप स्वयं अनुभव करेंगे कि आपके जीवन में आशातीत परिवर्तन बाहें फैलाकर उपस्थित हैं। वाल्मीकीय रामायण में–

तपते यजते चैव यच्च दानं प्रयच्छति।
क्रोधेन सर्वं हरति तस्मात् क्रोधं विसर्जयेत्।।

(श्री वाल्मिकी रामायण उत्तरकाण्ड ५९ प्रक्षिप्त २, २२)

अर्थात– क्रोध से मनुष्य के तप, यज्ञ और दान का पुण्य नष्ट हो जाता है। इसलिए क्रोध को त्याग देना चाहिए। ■

गर्भ के नौ माह

नौ ग्रहों का प्रभाव

पंडित कैलाशनारायण
ज्योतिषाचार्य
उज्जैन, मध्य प्रदेश

मानव जाति में गर्भावस्था का समय 279 दिन का है। प्रायः यह मासिक धर्म के समय से गिनना प्रारंभ होता है। मासिक धर्म के 280 दिन के बाद बच्चे का जन्म होता है जो कि लगभग दसवे मास का समय है। ये नौ माह एक नवजीव के निर्माण और मां के लिए बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। यदि हमें इनके बारे में ज्योतिष जानकारी हो तो निश्चित रूप से गर्भस्थ शिशु को उत्तम जीवन और संस्कार प्रदान किए जा सकते हैं। अभी हम इन्हीं दस मासों की विवेचना कर रहे हैं

▸ संसर्ग मार्ग, मैथुन, रज व वीर्य इन सबके कारक शुक्र हैं। गर्भावस्था के पहले माह में वीर्य व रज का सम्मिश्रण तरल रूप में रहता है, अतरू इस माह के स्वामी शुक्र हैं। स्त्री की जन्मपत्रिका में यदि शुक्र अस्त वक्री या पीड़ित हों तो इस समय विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। शुक्र की आराधना हेतु **'ऊँ शुं शुक्राय नमः'** इस मंत्र का जाप करना चाहिए। गर्भवती स्त्री के पहले माह के दौरान यदि शुक्र गोचर के कारण भी पीड़ित हों तो समस्या आ सकती है, अतरू ध्यान रखना चाहिए।

▸ दूसरे माह में तरल सम्मिश्रण एक पिण्ड का रूप धारण करने लगता है इसमें जड़ता निहित होती है। पृथ्वी पुत्र मंगल इस मास के स्वामी हैं। दूसरे माह में मांस की उत्पत्ति होती है, मांस घनीमूत अवस्था आदि के कारक मंगल हैं। स्त्री की जन्म पत्रिका में मंगल यदि दुःस्थान में हो या दूसरे माह के दौरान गोचर वश वक्री अस्त या पीड़ित हो जाएं तो समस्या आ सकती है। मंगल देव की आराधना हेतु स्त्री को **'ऊँ भौं भौमाय नमः'** मंत्र का जाप करना चाहिए।

▸ तीसरे महीने में भ्रूण के लिंग का निर्धारण हो जाता है और भ्रूण के हाथ–पैर आदि विकसित होने लगते हैं। इस महीने के स्वामी बृहस्पति हैं। अब पिण्ड जीव रूप में आ जाता है। जीवन प्रदान करना और वृद्धि करना बृहस्पति देव का कारकत्व है। चूंकी अंग विकास और हलचल तीसरे माह में आरंभ हो जाती है अतः इस माह में बृहस्पति देव की आराधना करनी चाहिए। गर्भस्थ स्त्री की जन्मपत्रिका में यदि बृहस्पति पीड़ित हों या गोचरवश इस माह के दौरान वक्री, अस्त या अन्य रूप से पीड़ित हो तो समस्या हो सकती है, अतः विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। बृहस्पति देव की प्रसन्नता हेतु मंत्र जाप करना चाहिए **'ऊँ बृं बृहस्पतये नमः'**

▸ गर्भाधारण के चौथे महीने शरीर में हड्डियों का निर्माण शुरु हो जाता हैं। हड्डियां मजबूती व सामर्थ्य का प्रतीक हैं। मजबूती व सामर्थ्य सूर्य देव के आधीन है एवं इस माह के स्वामी सूर्य देव हैं। यदि स्त्री की कुण्डली में सूर्य देव पीड़ित हों तो समस्या आती है। इस

माह में यदि गोचरवश भी सूर्य राहु या केतु से पीड़ित हों यानि सूर्य ग्रहण लगे तो भी गर्भ को कष्ट संभावित है। इस माह सूर्य देव के मंत्र **'ऊँ धृणिः सूर्याय नमः'** का जाप करना चाहिए। और पुंसवन संस्कार करना चाहिये।

▸ पांचवे महीने में गर्भस्थ पिण्ड में रक्त का निर्माण होने लगता है। रक्त द्रव रूप है। द्रव रूप या जल रूप पदार्थो के कारक चन्द्रमा हैं। चन्द्रमा मन व भावनाओं को भी नियंत्रित करते हैं अतः इस माह के स्वामी चन्द्रमा है। इसी महीने में रक्त, नसें और त्वचा का निर्माण होता है। गर्भवती स्त्री की पत्रिका में यदि चन्द्रमा अस्त हों, नीच राशि में या दुः स्थान में हों तो परेशानी होती है और इस माह चन्द्रमा गोचरवश ग्रहण योग बना दें तो भ्रूण को परेशानी होती है अतरू यदि स्त्री चन्द्रमा की आराधना करें तो लाभदायक सिद्ध होगा। **'ऊँ सों सोमाय नमः'** मंत्र का जाप करें।

▸ छठें महीने में भ्रूण के नाखून व रोम निकल आते हैं। नाखून व बाल अवचेतन होते हैं उनमें जान नहीं होती। इनका विकास भी अच्छे स्वास्थ्य का प्रमाण है। नाखून, बाल, रोम आदि शनि देव के विषय होने के कारण इस माह के स्वामी शनिदेव हैं। स्त्री की जन्म. पत्रिका में शनि यदि वक्री, पीड़ित या अस्त हों तो शिशु को कष्ट हो सकता है अतः इस माह में स्त्री को शनिदेव की आराधना करनी चाहिए। मंत्र जाप भी लाभ दे सकता है। **'ऊँ शं शनैश्चराय नमः'**

▸ सातवां माह और भी महत्वपूर्ण है। इस माह में बुद्धि का प्रवेश होता है। चेतन होने पर मस्तिष्क सुख–दुख महसूस करने लगता है। बुद्धि, विवेक आदि के कारक बुध इस माह के स्वामी हैं। वे ही जीव में चेतना, बुद्धि का प्रकाश जगाते हैं। यदि स्त्री की जन्मपत्रिका में बुध पीड़ित हो तो समस्या आने की संभावना बढ़ जाती है और यदि गोचरवश बुध पीड़ित हो तो संस्कारों पर भी प्रभाव निश्चित है। समस्याओं से सुरक्षा हेतु बुध देव की आराधना करनी चाहिए। और **'ऊँ बुं बुधाय नमः'** का जाप करना चाहिये।

▸ आठवां महीना चूंकि थोड़ा जटिल होता है अतः इस माह में गर्भस्थ महिला को आराम करने की सलाह दी जाती है। आठवें माह का स्वामी स्वयं महिला का लग्नेश होता है। यदि महिला इस माह में प्रसूता हो जाएं तो शिशु को अधिक कष्ट होते हैं। सुरक्षा की दृष्टि से स्त्री को लग्नेश की आराधना करनी चाहिए। इसी महीने में भारतीय धर्मशास्त्रों में सीमांतोन्नयन संस्कार करने का विधान है, जिससे गर्भ सुरक्षित रहें।

▸ नौवें माह के चन्द्रमा और दसवें माह के स्वामी सूर्य होते हैं। कोई भी महिला जब पहली बार गर्भ धारण करती है, तब उसे इन नियमों का पालन करना चाहिए। दूसरी बार गर्भवती होने पर गर्भकाल के महीनों के स्वामियों की आराधना करनी चाहिए। वैसे भी गर्भिणी स्त्री की जन्मपत्रिका में जो ग्रह शुभ अवस्था में होते हैं, उस ग्रह संबंधी मास में स्वस्थ रहती है और गर्भ की पुष्टि होती है लेकिन जो ग्रह पीड़ित नीच या शत्रु राशि में हों दुःस्थान में हों उस ग्रह से संबंधित मास में कष्ट आने की संभावना अधिक रहती हैं। अतः महिला को नियमों पालन करते हुए इस समय को गुजारना 9 महीने, 9 दिन, गर्भ में, बच्चा क्यों रहता है।

'क्या है बच्चे को महान बनाने का वैज्ञानिक उपाय–

लोग ज्योतिष पर बहुत कम विश्वास करते है क्योकि ज्योतिषियों ने ही ज्योतिष का विनाश किया है उनके अधूरे ज्ञान के कारण ऐसा हुआ है।

गर्भ मे बच्चा 9 महीने और 9 दिन ही क्यो रहता है। इसका एक वैज्ञानिक आधार है हमारे ब्रह्मांड के 9 ग्रह अपनी अपनी किरणों से गर्भ मे पल रहे बच्चे को विकसित करते हैं।

हर ग्रह अपने स्वभाव के अनुरूप बच्चे के शरीर के भागों को विकसित करता है।अगर कोई ग्रह गर्भ मे पल रहे बच्चे के समय कमजोर है तो उपाय से उसको ठीक किया जा सकता है।

1. गर्भ से 1 महीने तक शुक्र का प्रभाव रहता है अगर गर्भावस्था के समय शुक्र कमजोर है तो शुक्र को मजबूत करना चाहिए।

अगर शुक्र मजबूत होगा तो बच्चा बहुत सुंदर होगा। और उस समय स्त्री को चटपटी चीजे खानी चाहिए शुक्र का दान न करे अगर दान किया तो शुक्र कमजोर हो जाएगा।

कुछ ज्योतिषी अधूरे ज्ञान के कारण शुक्र का दान करा देते है। दान सिर्फ उसी ग्रह का करे जो पापी और क्रूर हो और उसके कारण गर्भपात का खतरा हो।

2. दूसरे महीने मंगल का प्रभाव रहता है। मीठा खा कर मंगल को मजबूत करे तथा लाल वस्त्र ज्यादा धारण करें।

3. तीसरे महीने गुरु का प्रभाव रहता है। दूध और मीठे से बनी मिठाई या पकवान का सेवन करे तथा पीले वस्त्र ज्यादा धारण करें।

4. चौथे महीने सूर्य का प्रभाव रहता है। रसों का सेवन करे तथा महरून वस्त्र ज्यादा धारण करें।

5. पांचवे महीने चंद्र का प्रभाव रहता है। दूध और दही तथा चावल तथा सफेद चीजों का सेवन करे तथा सफेद वस्त्र अधिक धारण करें।

6. छटे महीने शनि का प्रभाव रहता है। कसैली चीजों केल्शियम और रसों के सेवन करे तथा आसमानी वस्त्र ज्यादा धारण करें।

7. सातवे महीने बुध का प्रभाव रहता है। जूस और फलों का खूब सेवन करे तथा हरे रंग के वस्त्र ज्यादा धारण करें।

8. आठवे महीने फिर चंद्र का तथा नौवे महीने सूर्य का प्रभाव रहता है। इस दौरान अगर कोई ग्रह नीच राशि गत भ्रमण कर रहा है तो उसका पूरे महीने यज्ञ करन चाहिए।

जितना गर्भ ग्रहों की किरणों से तपेगा उतना ही बच्चा महान और मेधावी होगा जैसी एक मुर्गी अपने अंडे को ज्यादा हीट देती है तो उसका बच्चा मजबूत पैदा होता है।

अगर हीट कम देगी तो उसका चूजा बहुत कमजोर होगा। उसी प्रकार माँ का गर्भ ग्रहों की किरणों से जितना तपेगा बच्चा उतना ही मजबूत होगा।

जैसे गांधारी की आँखों की किरणों के तेज से दुर्योधन का शरीर वज्र का हो गया था। ■